thearyasamaj.org

ओ३म्

पाक्षिक

परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

वर्ष - ५७ अंक - ८ | महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र | अप्रैल (द्वितीय) २०१५

महर्षि दयानन्द सरस्वती

thearyasamaj.org

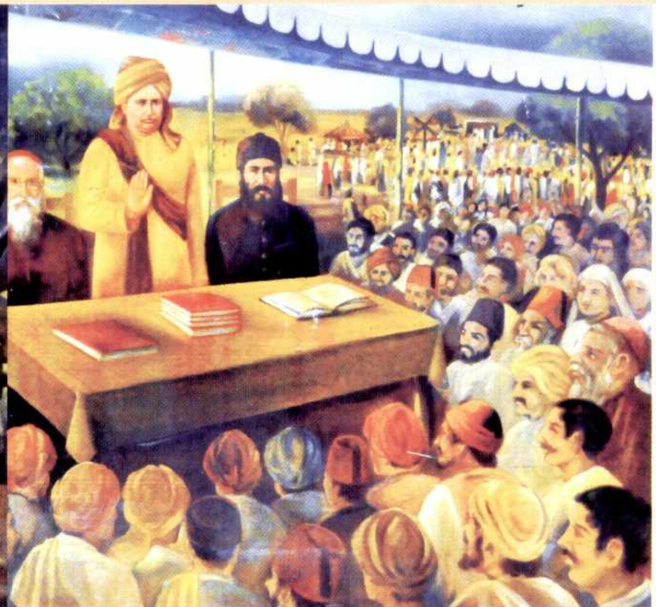

महर्षि के जीवन की झलकियाँ

thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ५७ अंक : ८
दयानन्दाब्द: १९१
विक्रम संवत्: वैशाख कृष्ण, २०७२
कलि संवत्: ५११६
सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११६

सम्पादक
प्रो. धर्मवीर

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा,
केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-

भारत में

वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, **द्विवार्षिक**-९५ पा./१५२ डा., **त्रिवार्षिक**-१४० पा./२२५ डा., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-५०० पा./८०० डा.।

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षा:,
सत्यव्रता रहितमानमलापहारा:।
संसारदु:खदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकारा:।।

RNI. No. ३९५९/५९

परोपकारी

अप्रैल द्वितीय २०१५

अनुक्रम

१. मोदी सरकार चर्च विरोधी नहीं, चर्च...	सम्पादकीय	०४
२. सुखानुशयी राग:-७	स्वामी विष्वङ्	०८
३. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	१४
४. भारतीय जी की शोध व्यथा-कथा	ओममुनि वानप्रस्थी	१९
५. स्मृति और समझ	ब्र. कश्यप कुमार	२१
६. वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन		२३
७. ऊमर काव्य	ऊमरदान लालस	२५
८. स्तुता मया वरदा वेदमाता-८		३१
९. पुस्तक-समीक्षा	देवमुनि	३२
१०. संस्था-समाचार		३३
११. जिज्ञासा समाधान-८५	आचार्य सोमदेव	३७
१२. प्रतिक्रिया		३९
१३. आर्यजगत् के समाचार		४०

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

thearyasamaj.org

मोदी सरकार चर्च विरोधी नहीं चर्च हिन्दू विरोधी है

मोदी सरकार को बने थोड़े ही दिन हुए थे। पंजाब के एक नगर में सामाजिक कार्य करने वाली बहन जी के घर पर बैठकर देश की परिस्थितियों पर चर्चा चल रही थी। बहन जी ने बहुत कष्ट से कहा- मोदी सरकार के राज में आलू-प्याज अस्सी रुपये किलो बिक रहा है, गरीब आदमी कैसे जीवन यापन करेगा? उन्हें लग रहा था, मोदी प्रधानमन्त्री बनकर कुछ कर क्यों नहीं रहे? उनकी गरीबों के साथ सहानुभूति को देखते हुए मैंने निवेदन किया- बहन जी, मोदी को जो कुछ करना था, वह तो उनके प्रधानमन्त्री बनने की शपथ लेते ही हो गया। रही आलू-प्याज की कीमतों की बात, तो एक बार कितनी भी बढ़ जाये, थोड़े समय में उन्हें नीचे आना ही है।

बहन जी ने पूछा- वह क्या था, जो मोदी के शपथ लेते ही हो गया? मोदी के शपथ लेते ही कौन सा कार्य सम्पन्न हो गया? वह कार्य साधारण नहीं था। हिन्दू समाज और हिन्दू राष्ट्र की समाप्ति का क्षण हमारे इतिहास में आ चुका था, जो इस समाज के लिए मरण के तुल्य था परन्तु मोदी की जीत ने हिन्दू समाज और हिन्दू राष्ट्र को एक बार मरने से बचा लिया और इस देश को नया जीवन मिल गया। इस बात को वे लोग समझ सकते हैं, जो सोनिया गाँधी की उस इच्छा को जानते हैं, जिसमें अल्पसंख्यक सुरक्षा विधेयक लोकसभा से पारित करवाना चाहती थी। यदि वह विधेयक लोकसभा में स्वीकृत होता तो हिन्दुओं का और इस राष्ट्र का आत्महत्या करने जैसा होता। यदि सोनिया गाँधी किसी भी तरह से इस चुनाव में जीत जाती तो अल्पसंख्यक सुरक्षा विधेयक को लोकसभा द्वारा स्वीकृत करने का मार्ग प्रशस्त हो जाता। सोनिया गाँधी का दस वर्ष का शासन ईसाइयत के लिये, इस देश की स्वतन्त्रता के बाद के काल में स्वर्ण युग रहा है। सोनिया गाँधी के माध्यम से चर्च ने अपने धार्मिक साम्राज्य के विस्तार के लिये इन दस वर्षों का भरपूर लाभ उठाया। चर्च नेता जॉन दयाल, सेम्युअल जैसे लोग सरकार के मार्गदर्शक बने हुए थे, जिनके मार्गदर्शन में अल्पसंख्यक सुरक्षा विधेयक तैयार किया गया था। भारत सरकार और अन्तर्राष्ट्रीय चर्च समर्थक लोगों का समर्थन और सहयोग सोनिया गाँधी को भरपूर मिलता रहा। उसी का परिणाम था कि लोक सभा के चुनाव में कांग्रेस की करारी हार हुई। इस हार पर टिप्पणी करते हुए रक्षा मन्त्री एण्टोनी को भी कहना पड़ा था- सरकार को जनता ने हिन्दू विरोधी समझा। सोनिया गाँधी के राज में हजारों स्वयं सेवी संगठन इस देश में देशी-विदेशी सहायता से हिन्दुओं को धर्मान्तरित करके ईसाई बनाने में लगे हुए थे। इसी युग में आन्ध्रप्रदेश के मुख्यमन्त्री रेड्डी ने बड़ी संख्या में आन्ध्रप्रदेश के हिन्दुओं को ईसाई बनाया। इतना ही नहीं, रेड्डी के समय खाली मन्दिरों को और सरकारी जमीनों को, चर्च को दिया गया। रेड्डी ने तिरुपति की पहाड़ियों को भी चर्च को देने की घोषणा की थी, जिसका हिन्दू समाज ने प्रबल विरोध किया था, जिसके कारण इसको कार्यान्वित नहीं किया जा सका। आप दक्षिण में कहीं भी चले जायें- केरल में, आन्ध्र में, तमिलनाडु में, कर्नाटक में, आपको ईसाइयत का ही प्रचार ऐसा दिखाई देगा- हर पेड़, मकान, तिराहे पर ईसा का विज्ञापन होगा। वह भगवान जो आपके पापों को क्षमा कराने के लिए आपके आने से पहले ही सूली पर चढ़ गया और आपको पाप करने की छूट दे गया, परन्तु यह छूट उसी को प्राप्त होगी जो उस पर ईमान लायेगा। इसको देखने से ऐसा लगता है, ईसाइयत एक धर्म न होकर भारी उद्योग है। धर्म तो विचारों से चलता है, चर्च विचारों से नहीं, पैसे से चलता है, इसलिए यह एक बड़ा व्यवसाय बन गया है। इसमें काम करने वाले को साधन-सुविधाओं का लोभ तथा मुफ्त में पाप क्षमा कराने का इनाम मिलता है।

इसमें चर्च को बहुत बड़ी सफलता इन दिनों मिली। मनुष्य के सामने तात्कालिक रूप से स्वार्थ को और परोक्ष में लाभ देने वाले आदर्श को चुनना हो तो प्रायः मनुष्य स्वार्थ को चुन लेता है। निर्धन, दुःखी, असहाय व्यक्ति शीघ्रता से सहायता स्वीकार कर लेता है, फिर सम्मान के साथ मिले तो कहना ही क्या? चर्च को साधनों के साथ सत्ता का सहयोग मिल रहा था, तो उसकी सफलता निकट थी। आज चर्च को जीने के लिए गरीब देशों की बहुत आवश्यकता है। अमीर देशों में चर्च खाली पड़े हैं, बिक रहे हैं, उनके पास भक्तों की भारी कमी है। जैसे ये देश

thearyasamaj.org

उद्योग व्यापार के लिए विकसित देशों के स्वर्ग बने हुए हैं, उसी प्रकार धर्म के व्यापार के लिए भी यहाँ खुला क्षेत्र है। जिस प्रकार धन से सत्ता मिलती है और सत्ता से धन मिलता है, उसी प्रकार धर्म से सत्ता प्राप्त की जा सकती है और सत्ता से अपने धर्म को दृढ़ किया जा सकता है।

समाजवादी विचारक लोहिया ने कहा था- तात्कालिक धर्म को राजनीति कहते हैं और दीर्घकालीन राजनीति को धर्म कहा जाता है। यह बात किस तरह से सच है, उसे इस देश के इतिहास से समझा जा सकता है। इस देश में दो सत्ताओं ने लम्बे समय तक राज्य किया और उनको दो धर्मों ने स्थिर किया। इन सत्ताओं ने इन धर्मों को इस देश में विस्तार दिया, जिनके कारण इस देश को लम्बी गुलामी झेलनी पड़ी। उनमें पहले शासक मुसलमान थे, जो इस्लाम को साथ लाये। वे इस्लाम के प्रचार-प्रसार के लिए सत्ता को आगे रखते थे तो अंग्रेजों के साथ ईसाइयत आई, जो अंग्रेज की सत्ता को मजबूत करने का काम करती थी। दोनों धर्मों से इस देश में सत्ता दूर हो गई, परन्तु ये लोग अपने को सत्ता के सुख से दूर नहीं कर सके। उसी सत्ता की कामना इनके धार्मिक प्रचार का आधार है। यह सुख चर्च को सोनिया गाँधी के राज में फिर से भोगने का अवसर मिला, जिसके छिन जाने की तड़प आज चर्च के व्यवहार में अनुभव की जा सकती है।

आज चर्च के सामने जो संकट या खतरा है,वह उनके जीवन या उनकी व्यक्तिगत सुरक्षा का नहीं है। पहला संकट उनके स्वतन्त्रता पूर्वक हिन्दुओं को ईसाई बनाने की छूट समाप्त होने से है। वैसे भी हिन्दू जितना शोर मचाते हैं, उतना करते नहीं हैं, परन्तु जो सिर झुकाये स्वीकार करता था, वह यदि सिर उठाकर बात करने लगे तो खतरे की सम्भावना बढ़ जाती है। जितना धर्म परिवर्तन चर्च ने किया है, उतना तो मुसलमानों ने भी नहीं किया। मुसलमानों ने बलात् धर्म परिवर्तन कराया, चर्च छल-बल दोनों से धर्म परिवर्तन करता है। योजनाबद्ध रूप से धर्म परिवर्तन चर्च की विशेषता है। चर्च के जितने भी विद्यालय और चिकित्सालय हैं, ये धर्म परिवर्तन की योजना को ही मूर्त रूप देते हैं। अशिक्षित समाज को लोभ से और शिक्षित समाज को चिकित्सा व शिक्षा के माध्यम से अपने में सम्मिलित करते हैं। जितने कार्यकर्त्ता केरल में चर्च के हैं, उतनी तो छोटे-मोटे प्रदेश के कर्मचारियों की संख्या भी नहीं है। हजारों की संख्या में प्रचारक पादरियों को तैयार करना अकेले केरल का काम है। चर्च छल करने में पीछे नहीं है। अपने पादरियों को भगवे कपड़े पहनाना, चर्च को मन्दिर कहना, मरियम को देवी बताना, जाने कितने रूप इनके छल के समाज में देखे जा सकते हैं। अजमेर चर्च में एक पादरी फादर लैसर थे, जिनका पिछले दिनों उदयपुर में देहान्त हो गया, वे स्कॉटलैण्ड से आये थे, अस्सी वर्ष तक राजस्थान वनवासी क्षेत्रों में धर्म परिवर्तन के कार्य में लगे रहे। वे एक दिन दुःख से कहने लगे- हमने गत चार सौ वर्षों से इस देश की सेवा की, परन्तु लोगों में अभी तक हमारे लिए विश्वास उत्पन्न नहीं हुआ। उनको बताया गया कि आपकी सेवा, सेवा है ही नहीं, यह तो शुद्ध सौदा है, व्यापार है। कोई वस्तु के बदले मूल्य लेता है, चर्च वस्तु के या सहयोग के बदले मनुष्य का ईमान लेता है, फिर यह कार्य सेवा कैसे हुआ? यह शुद्ध सौदा है। सौदागर पर विश्वास कोई भी क्यों करे?

चर्च घर वापसी के कार्यक्रम को धर्मान्तरण कहता है, इस पर प्रतिबन्ध लगाने की माँग करता है, परन्तु धर्मान्तरण पर कानून बनाने का विरोध करता है, क्यों? चर्च को हिन्दुओं को ईसाई बनाने की छूट होनी चाहिए, परन्तु यदि कोई ईसाई हिन्दू बनता है तो चर्च को आपत्ति क्यों होनी चाहिए? यही तो पाखण्ड है, यही बेईमानी है, जिसे चर्च छोड़ना नहीं चाहता। इसे चर्च धार्मिक स्वतन्त्रता में बाधा मानता है। यूरोप-अमेरिका कितना भी धार्मिक स्वतन्त्रता का ढोल पीटते हों, परन्तु वे केवल ईसाइयत को ही धर्म मानते हैं, उसी की सुरक्षा की बात करते हैं, उसी के लिये यत्न करते हैं। वहाँ की सरकारें धर्म के नाम पर दुनियाभर के ईसाइयों की ठेकेदारी करती हैं, परन्तु हिन्दुओं की चिन्ता भारत की सरकार करे तो उसे साम्प्रदायिक, धर्म स्वतन्त्रता की विरोधी घोषित कर देती हैं।

चर्च ने दुनिया भर के ईसाइयों की चिन्ता करने के लिए अमेरिकी संसद से दो कानून बनवा रखे हैं। वैसे तो इन्हें व्यक्ति की स्वतन्त्रता के लिये बनाया गया बताते हैं, परन्तु इनका उपयोग चर्च की सुरक्षा समर्थन के लिये करते हैं। इनमें एक है- धार्मिक स्वतन्त्रता की रक्षा करना। इसके नाम पर अमेरिका किसी भी देश को धमकाने और दण्डित करने का काम करता है। उस देश का धार्मिक रिकॉर्ड खराब बताकर अपनी संसद में उन सरकारों की निन्दा करता है। उन देशों पर आर्थिक प्रतिबन्ध लगाता है। यह कार्य केवल चर्च को बनवाने और ईसाइयत की

thearyasamaj.org

वकालत करने के लिये है। एक अमेरिकी कानून मानव अधिकारों की रक्षा का है। यह शुद्ध पाखण्ड है, यह दूसरे देशों में सीधे हस्तक्षेप करने का बहाना है। यह कानून भारत में नक्सलियों, आतंकवादियों, हिंसा करने वालों की रक्षा करता है। नक्सलियों से जुड़े अमर्त्यसेन के मुकदमे का निरीक्षण करने के लिए विदेशी लोग भारतीय न्यायप्रणाली का निरीक्षण करते हैं। देश के सार्वभौम स्वतन्त्र सत्ता के निर्णयों की समीक्षा करने का अधिकार किसी विदेशी को क्यों होना चाहिए?

इन मानव अधिकारवादियों से सीमा पर आतंकवादियों से मरे सैनिक का केस नहीं लड़ा जाता, किसी कर्त्तव्य पालन कर रहे पुलिस की मृत्यु पर किसी मानवाधिकारवादी ने सहायता पहुँचाने की नहीं सोची। हाँ, आतंकवादी, राष्ट्रद्रोही, हिन्दू विरोधी लोगों के केस लड़ना इनका मानव अधिकार है। इनकी दृष्टि में मरने वाला न मानव था, न उसके परिवार वाले मानव हैं, मानव तो आतंकवादी और राष्ट्रद्रोही हैं। उनको बचाना इनकी प्राथमिकता है। हिन्दू गोधरा में मरे, हिन्दू भूकम्प में मरे या केदारनाथ की बाढ़ में मरे, वहाँ इनकी मानवता नहीं जागती, मोदी के विरुद्ध मानवाधिकार वादियों के संगठन आज भी पीछा नहीं छोड़ना चाहते। आज जब मोदी प्रधानमन्त्री बन गये हैं, तो मोदी सरकार ने क्या अच्छा किया, देश के लिए कौन-सी बात, नीति अच्छी चुनी है, यह इनकी चिन्ता का विषय नहीं है। आज ये लोग मोदी को बदनाम करने और मोदी सरकार को असफल बनाने के लिए जिस तरह काम कर रहे हैं, उसके उदाहरण हैं-

१. मोदी अल्पसंख्यक विरोधी है, मोदी के राज्य में अल्पसंख्यक सुरक्षित नहीं है।

२. मोदी सरकार महिला विरोधी है। मोदी सरकार के आने के बाद महिलाओं पर अत्याचार बढ़े हैं।

३. मोदी किसान विरोधी है।

४. मोदी मजदूर, गरीबों का विरोधी है।

पहले तो मोदी चुनाव जीतेगा, भाजपा की सरकार बनेगी- यह कल्पना नहीं थी। मोदी को हराने के लिये सारी हिन्दू और भारत विरोधी शक्तियों ने जोर लगा लिया, परन्तु भारत की जनता ने पूर्ण बहुमत से सरकार भी बनवा दी। उसी दिन से चर्च ने अपना मोदी विरोधी अभियान प्रारम्भ कर दिया। मोदी के चुनाव और मोदी की जीत को अल्पसंख्यकों पर दु:खों का पहाड़ टूटने की तरह समझाया और डराया गया। इसके लिये चुनाव के बाद आये चर्च के वक्तव्य देखने लायक हैं- समाचार पत्र में एक आर्क बिशप का वक्तव्य छपा है- मोदी के राज्य में अल्पसंख्यकों पर अत्याचार बढ़े हैं। चर्च पर अत्याचार की जितनी भी घटनायें समाचारों में आई हैं, वे सब प्रायोजित हैं, उनमें खोजने पर कोई तथ्य नहीं मिला है। प्रशासन ने पाया कि मैंगलोर के चर्च में घटी घटना एक चर्च के कर्मचारी के साथ घटी है जो संस्था के प्रशासन से नाराज है और इस घटना को लेकर अमेरिका के राष्ट्रपति की व्यथा जाग उठी और गाँधी याद आ गये। जिसके अपने राज्य में नक्सलवाद, धार्मिक उन्माद करने वाले पर अंकुश नहीं, वह भारत को सहिष्णुता का उपेदश दे रहा है। इसे कहते हैं- घड़ियाली आँसू बहाना। मोदी शासन में चर्च में तोड़-फोड़ की घटनायें नगण्य हैं, उनमें भी स्थानीय झगड़े हैं, कोई सामुदायिक या सामाजिक कारण नहीं है। इतने से समाचारों को लेकर हिन्दुओं को नाजी और मोदी को हिटलर कहने वालों से इस देश के निवासियों को सावधान होना चाहिए। यह संगठित, विदेशी धन पर पलने वाला गिरोह इस देश की प्रगति और स्वतन्त्रता, समाज में व्याप्त सामाजिक समरसता को मिटाने का षड्यन्त्र कर रहा है।

मोदी सरकार के महिलाओं के हित में किये गये कार्यों की चर्चा न करके बलात्कारियों को लेकर बनाई फिल्म को महिला दिवस पर दिखाकर हिन्दू समाज एवं संस्कृति को नीचा दिखाने व मोदी को बदनाम करने का प्रयास नहीं तो क्या है? जिस बलात्कारी की फिल्म दिखाई जा रही है, वह घटना न तो मोदी सरकार के समय की है, न फिल्म बनाने की अनुमति मोदी सरकार ने दी है, फिर एक दुष्ट व्यक्ति को पूरे समाज की सोच का प्रतिनिधि बताने का प्रयास करना हिन्दू समाज को अपमानित करने का प्रयास नहीं तो क्या है? इसको दिखाने के लिये महिला दिवस का चुनाव करना, क्या एक सोची-समझी चाल नहीं है?

पिछले दिनों बंगाल के नादिया जिले के एक मिशनरी स्कूल में एक वृद्धा साध्वी से किसी व्यक्ति ने बलात्कार किया। इस घटना की चमत्कार पूर्ण खोज हुई है, जिसे एन.डी. टी.वी. ने १७ मार्च को बताया। यह घर वापसी के विश्व हिन्दू परिषद् के परिणाम स्वरूप हुआ है। इसमें बलात्कार करने वाला हिन्दू नहीं, कोई बंग्लादेशी है। किसी हिन्दू संगठन का इससे कोई सम्बन्ध नहीं, फिर यह घर वापसी का परिणाम कैसे हो सकता है? इसके विरोध

thearyasamaj.org

में ईसाइयों का जो प्रतिनिधि मण्डल पश्चिम बंगाल की मुख्यमन्त्री ममता बेनर्जी से मिला, वहाँ ईसाई समुदाय के नेता का वक्तव्य है- यह मोदी सरकार की अल्पसंख्यक विरोधी गतिविधियों का परिणाम है। घटना विद्यालय में घटी, विद्यालय प्रशासन उत्तरदायी है, जिले में घटी, जिला प्रशासन उसे देखेंगे, प्रान्त के स्तर पर ममता से कोई शिकायत नहीं, शिकायत प्रधानमन्त्री से है। यह बौद्धिक दिवालियापन है या विदेशी दलाली का कमाल है? कानून व्यवस्था की सीधी जिम्मेदारी राज्य सरकार की होती है, उससे शिकायत नहीं है, शिकायत है प्रधानमन्त्री मोदी से। एक और घटना ध्यान देने योग्य है। धर्मान्तरण करना सदा से ही चर्च का मुख्य व्यापार रहा है, उसको लेकर संघ प्रमुख मोहन भागवत ने कहा- मदर टेरेसा का कार्य केवल धर्मान्तरण के लिये था, इसमें झूठ तो कुछ भी नहीं, वह महिला चर्च की दृष्टि में सन्त हो सकती है, क्योंकि चर्च के लिये काम करती थी, परन्तु पुलिस के पुराने वरिष्ठ अधिकारी को, अपने देश ईसाई होने के कारण परायापन लगा है- यह तथ्य को बिना जाने कहे गये कथन का दुरुपयोग है। एन.डी. टी.वी. जैसे ले भग्गू लोगों का प्रचार मात्र है। जिसको पूरे जीवन में जनता का शासन का पूरा सम्मान और अधिकार मिला है, वह गलत, बात क्यों सोचता है?

जो चर्च अल्पसंख्यकों के उत्पीड़न और चर्च पर आक्रमण की बात करता है, वह चर्च क्या उत्तर देने का साहस कर सकता है कि नागालैण्ड में् सारे मन्दिरों को धरती निगल गई या चील उठा ले गई? अल्पसंख्यकों का रोना रोने वाला चर्च क्या इस बात को झुठला सकता है कि मणिपुर की पूरी-की-पूरी जाति को बेघर कर दिया गया है और वह आज भी जंगलों में भटकने के लिये विवश है? चर्च के इस चेहरे पर कोई समाचार पत्र या समाचार दिखाने वाला प्रकाश डालने की हिम्मत करेगा?

चर्च का रोना तो धर्मान्तरण के अपराध को रोकने से है और इस कार्य के लिए करोड़ों रुपये विदेशों से यहाँ के स्वयं सेवी संगठनों को मिलते थे, भारत सरकार ने उनपर रोक लगा दी है। चर्च की अहिंसा और सेवा पर संस्कृत की ये पंक्तियाँ सटीक बैठती हैं-

पश्य लक्ष्मण पम्पायां बकः परमधार्मिकः।
शनैः शनै पदं धत्ते जीवानां वध शङ्कया।।
बकः किं श्लाघसे राम येनाहं निष्कुलीकृता।
सहवासी विजानाति चरित्रं सहवासिनाम्।।

- धर्मवीर

योग दर्शन का अध्यापन

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा के द्वारा ऋषि उद्यान, अजमेर में महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल में वर्षों से संस्कृत व्याकरण और दर्शनों का अध्यापन कार्य सुचारु रूप से चल रहा है। इसी क्रम में महर्षि पतञ्जलि द्वारा प्रणीत **योग दर्शन** (महर्षि वेद व्यास कृत व्यास भाष्य सहित) का **स्वामी विष्वङ् परिव्राजक** द्वारा मई-२०१५ के प्रथम सप्ताह से विधिवत् नियमित रूप से अध्यापन कराया जाएगा।

योग दर्शन षड्दर्शनों में मुख्य ग्रन्थ है, जो अध्यात्म प्रेमियों व साधकों के लिए विशेष उपयोगी ग्रन्थ है। इसमें १९५ सूत्र हैं, जो चार पादों में विभक्त हैं। योग के आठ अंगों की विस्तृत व्याख्या को सुनने का और जीवन में उतारने का यह स्वर्णिम अवसर है। यह दर्शन ५-६ महीनों में सम्पूर्ण हो जाएगा।

इस काल में ऋषि उद्यान में प्रतिदिन यज्ञोपरान्त उपदेश व प्रवचन का लाभ भी प्राप्त हो सकेगा। विभिन्न समयों पर विविध विषयों पर विद्वानों द्वारा कक्षाएँ भी होती रहेंगी। ब्रह्मचारियों, वानप्रस्थियों संन्यासियों व अन्य असमर्थों हेतु निवास और भोजन व्यवस्था निःशुल्क है। समर्थ प्रतिभागी इच्छानुसार सहयोग कर सकते हैं। माताओं व बहनों की निवास की व्यवस्था पृथक् रहेगी।

सम्पर्क सूत्र - स्वामी विष्वङ् परिव्राजक- ०९४१४००३७५६ **समय**- सायं ५.३० से ६.०० बजे तक।
पता - ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर-३०५००१ (राज.)
email : psabhaa@gmail.com

thearyasamaj.org

सुखानुशयी रागः-७

- स्वामी विष्वङ्

अविद्या के पाँच विभागों में से दो विभागों (अविद्या, अस्मिता) की परिभाषाएँ बताकर महर्षि पतञ्जलि तीसरे विभाग की चर्चा प्रस्तुत सूत्र में कर रहे हैं। महर्षि कहते हैं- सुख के पीछे-पीछे चलने वाले क्लेश को राग कहते हैं। अभिप्राय यह है कि मनुष्य जिस सुख का अनुभव करता है, उस सुख के अनुभव के पीछे मन में सुख के प्रति लगाव बना रहता है-आकर्षण बना रहता है। उस लगाव को, उस आकर्षण को यहाँ राग शब्द से कहा जा रहा है। मनुष्य को जहाँ कहीं भी सुख का अनुभव होता है, वहाँ उसे राग हो जाता है। मिथ्याज्ञान से युक्त मनुष्य को जहाँ-जहाँ सुख की अनुभूति होती हो, वहाँ-वहाँ राग अवश्य होता है। ऐसा कभी नहीं हो सकता कि मिथ्याज्ञान से युक्त होकर सुख तो लेवें पर राग न हो, इसलिए महर्षि पतञ्जलि कहते हैं- सुख अनुभव के पीछे-पीछे चलने वाला लगाव रूपी, आकर्षण रूपी क्लेश ही राग है।

महर्षि वेदव्यास प्रस्तुत सूत्र की व्याख्या करते हुए लिखते हैं-

सुखाभिज्ञस्य सुखानुस्मृतिपूर्वः सुखे तत्साधने वा यो गर्धस्तृष्णा लोभः स राग इति।

अर्थात् सुख का अनुभव करने वाले मनुष्य को सुख की स्मृति आती रहती है। उस सुख की स्मृति के अनुरूप सुख में और उस सुख के साधनों में जो पुनः प्राप्त करने की चाह होती है, उसे दुबारा पाने की जो तृष्णा-इच्छा होती है या यूँ कहें, उसे बार-बार अपनाने का लालच-लोलुपता होती है। उस गर्ध रूपी चाह को, उस तृष्णा रूपी इच्छा को, उस लोभ रूपी लालच को राग नाम से कहा जाता है। यहाँ महर्षि वेदव्यास ने राग को समझाने के लिए तीन शब्दों का प्रयोग (गर्धः, तृष्णा, लोभः) किया है। ये तीनों शब्द राग को ही स्पष्ट करते हैं। संसार में राग के लिए लालच, लालसा, लगाव, लोभ आदि शब्दों का प्रयोग होता रहता है।

मनुष्य रूप,रस, गन्ध, स्पर्श या शब्द सम्बन्धी किसी भी सुख को ले रहा होता है, तो उस सुख क छाप मन में पड़ती है, उस छाप को संस्कार कहते हैं। इस प्रकार सुख अनुभव के जितने भी संस्कार मन में एकत्रित होते हैं, उनकी स्मृतियाँ मनुष्य को आती रहती हैं। उन स्मृतियों के अनुरूप मनुष्य उस-उस सुख के प्रति अथवा उस-उस सुख के साधन के प्रति आकृष्ट होता रहता है और उसे अपनाने का पुरुषार्थ करता रहता है। जब तक सुख या सुख के साधन प्राप्त नहीं होते हैं, तब तक मनुष्य उद्यम करता ही रहता है। जब उस सुख और सुख के साधनों के पुरुषार्थ के पीछे राग कारण बना हुआ होता है।

यद्यपि राग की परिभाषा एक ही है, परन्तु मनुष्य अलग-अलग हैं, पशु, पक्षी आदि अलग-अलग हैं। इसलिए राग भी अलग-अलग प्रकार से होता है। चेतन प्राणि -मनुष्य, पशु,पक्षी आदि का राग अलग प्रकार का है और जड़ पदार्थ- रूपये, वस्त्र, मकान, गाडी आदि का राग अलग प्रकार का है। व्यक्ति-व्यक्ति का राग अलग-अलग होता है। रूप का राग अलग है, तो रस का राग अलग है, गन्ध का राग अलग है तो स्पर्श व शब्द का राग अलग-अलग है। इतना ही नहीं रूप-रूप में भी अलग-अलग प्रकार हैं, ऐसे ही रस,गन्ध,स्पर्श व शब्द के विभिन्न प्रकार के भेद हैं। इस प्रकार असंख्य प्राणि होने के कारण असंख्य प्रकारों से राग होता है। और असंख्य प्रकार के वस्तुएँ होने के कारण असंख्य प्रकार से राग होता है। इस प्रकार व्यक्ति भेद से राग भेद असंख्य हो जाते हैं। व्यक्ति भेद से राग भले ही असंख्य हो जाते हों परन्तु रागत्व सब में व्यापक होने से जाति के रूप में राग को एक ही कहा जाता है।

मनुष्य के समक्ष दो प्रकार के पदार्थ हैं- एक जड़ दूसरे चेतन। इन दोनों में राग होता है। जड़ पदार्थ अनेक प्रकार के हैं। अलग-अलग जड़ पदार्थों के राग एक-दूसरे से अलग-अलग होते हुए भी रागत्व की दृष्टि से एक ही होता है। जब उन अलग-अलग जड़ पदार्थों से मनुष्य सुख ग्रहण करता है तब उन अलग-अलग सुखों की छाप मन में पड़ती है, तो उस छाप रूपी संस्कारों से प्रेरित होकर उस व्यक्ति के मन में जो चाह-इच्छा-लालच उत्पन्न होता है, उसे ही यहाँ राग कहा जा रहा है। उसी प्रकार चेतन प्राणि अनेक प्रकार के हैं, अलग-अलग प्राणियों के राग अलग-अलग होते हुए भी रागत्व सब में एक ही है। इस प्रकार अनेक जड़ पदार्थों के अनेक राग और अनेक चेतन पदार्थों के अनेक राग मनुष्य को दुःखी करते हैं।

thearyasamaj.org

इतने प्रकार के राग मन में विद्यमान हों तो मनुष्य कैसे ईश्वर के प्रति आकर्षित हो पायेगा?

मनुष्य ने जड़ और चेतन से सम्बन्धित जितने सुख भोगे हैं, उन सब के प्रति पुन: प्राप्त करने के लिए जो तृष्णा होती है, वह तो राग है ही, उसके साथ-साथ जिन जड़ और चेतनों से अब तक मनुष्य ने सुख भोगा ही नहीं है, परन्तु उनके प्रति सुना है, पढ़ा है, विचार किया है। सुनने से, पढ़ने से, विचार से भी मन में उनकी छाप पड़ती है। उस छाप रूपी संस्कार से स्मृति उत्पन्न होती है और उस स्मृति के अनुरूप चाह-तृष्णा उत्पन्न होती है, उसे भी राग कहते हैं।

यह आवश्यक नहीं है कि जिस सुख के या सुख के साधनों के अनुभव से जो संस्कार मन में पड़ता है, उसकी स्मृति से पुन: उस सुख को पाने की तृष्णा ही राग कहा जाये, बल्कि सुख अनुभव नहीं हुआ या सुख के साधनों को प्राप्त भी नहीं किया, फिर भी उस सुख और सुख के साधनों के प्रति भी राग होता है। यदि बिना सुख और सुख के साधनों को प्राप्त किये राग होता हो , तो महर्षि पतञ्जलि और महर्षि वेदव्यास के विपरीत माना जायेगा? इसका समाधान यह है कि ऋषियों के विपरीत नहीं जायेगा, क्योंकि जिन सुखों व सुख के साधनों को प्राप्त नहीं किया है, परन्तु उनके विषय में सुनते, पढ़ते, विचार करते समय उनके प्रति सुख अनुभव होता है। भले ही वह सुख अनुभव श्रवण सुख हो, पठित सुख हो या विचारित सुख हो। सुख अनुभव तो हुआ है, उसी सुख अनुभव के पीछे-पीछे चलने वाला लालच ही राग कहलाता है। चाहे वह सुख जड़ वस्तु या चेतन वस्तु से प्राप्त होने वाला हो अथवा श्रवण, पठित, विचारित सुख हो। सुख तो सुख ही है, चाहे किसी से सम्बन्धित हो, इस प्रकार राग मात्र, ऋषियों की परिभाषाओं के अनुरूप होना चाहिए।

असंख्य प्रकार के जड़ पदार्थों और असंख्य प्रकार के चेतन पदार्थों का राग मनुष्य के जीवन में कार्य करता रहता है। वह राग कभी वर्तमान (उदार अवस्था) में रहता है, कभी विच्छिन्न (दबा) रहता है, कभी-कभी तनू (कमजोर) होकर बहुत सुक्ष्मता से रहता है। यदि इन तीनों स्थितियों में नहीं है, तो प्रसुप्त (सोया हुआ) रहता है। मनुष्य को यह नहीं समझना चाहिए कि मुझमें अमुक-अमुक जड़ व चेतन वस्तु में राग नहीं है। हाँ, राग तो है परन्तु वर्तमान अवस्था में नहीं है, भीतर दबा हुआ है या बहुत सूक्ष्म होकर रह रहा है अथवा सोया हुआ है, इसलिए ऐसा प्रतीत होता है कि राग नहीं है, परन्तु राग है। जो व्यक्ति ऐसी स्थिति को अनुभव करता है, वही व्यक्ति राग को दूर करने का उद्यम कर सकता है और जो व्यक्ति अविद्या के कारण यह समझ बैठता है कि मुझ में राग नहीं है। वह व्यक्ति राग को दूर करने का उद्यम कभी नहीं कर पाता है। इसलिए मनुष्य को चाहिए कि वह प्रमाणों से युक्त होकर पूर्वापर का विचार करते हुए अपने मनुष्य जीवन के उद्देश्य को आत्मसमक्ष रखते हुए देखे, तो निश्चित रूप में राग समझ में आयेगा। जब मनुष्य ऋषियों के अनुरूप अपनी मति को बनाते हैं, तो निश्चित रूप से ऋषियों के समान अपने जीवन को भी कृतकृत्य कर सकते हैं तब ऋषियों का पुरुषार्थ सार्थक हो सकता है।

राग का विवेक राग को समाप्त करने वाला होता है,
राग का अविवेक राग को बढ़ाने वाला होता है।

इसलिए कहा जाता है **अज्ञानाद् बन्ध: और ज्ञानाद् मुक्ति:।**

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

अग्निहोत्र से दौलत बढ़ती

- पं. संजीव आर्य

यज्ञ एक विज्ञान है वैदिक अनुसन्धान है।
सबसे सुन्दर कर्म यही है खुशियों का सामान है।।
काम करो तो अच्छे करना, बुरे काम करना है मरना
यज्ञ से सुन्दर कर्म नहीं है-यज्ञ बिना जीना क्या जीना
जो न करे नादान है।।
झाड़ू-पोंछा, नहाना-धोना, ऐसा ही है हवन का करना
झाड़ू से ज्यों घर चमकाना, हवन से त्यों वायु महकाना
करते ऋषि गुणगान हैं-
जो भी हवन में डाला जाता, कोटि गुना हो वापस आता
तीनों लोकों में चढ़ जाता, सब देवों को शुद्ध बनाता
कुछ भी न नुकसान है।
अग्निहोत्र से दौलत बढ़ती, अग्निहोत्र से शोहरत बढ़ती
अग्निहोत्र से ताकत बढ़ती-अग्निहोत्र से हिम्मत बढ़ती
बढ़ता नित सम्मान है।।
अपने घर को स्वर्ग बनाएँ प्रात: सायं हवन रचाएँ
देव ऋणों से मुक्ति पाएँ-रूप रोज ही पुण्य कमाएँ।।
स्वर्ग का ये सोपान है।।

- गुधनीं, बदायुँ, उ.प्र.

thearyasamaj.org

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग-साधना शिविर (प्राथमिक व द्वितीय स्तर)

दिनांक : १४ से २१ जून, २०१५

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान-विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों-बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग-साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक-दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।
२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।
३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य-सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।
४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि-उद्यान परिसर में ही की जायेगी।
६. बाह्य-वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे समाचार-पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखना, पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।
७. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा सर्दी, खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।
८. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।
९. किसी भी मादक द्रव्य, चाय-कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।
१०. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन-सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।
११. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ-मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता-बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्-पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है। ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ अन्यथा यहाँ भी क्रय किया जा सकता है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ

thearyasamaj.org

में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४
email:psabhaa@gmail.com

: मार्ग :

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

-संयोजक

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उस पर '**मन्त्री परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।
IFSC - IBKL0000091

२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।
IFSC - SBIN0007959

मनुष्यों को उचित है कि परमेश्वर में ही मन बुद्धि को युक्त कर विद्वानों के सङ्ग से विद्या को पा सुखी हो अन्य मनुष्यों को भी इसी प्रकार आनन्दित करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.१४

जैसे विद्वान् लोग ईश्वर की सृष्टि में विद्या से पदार्थों की परीक्षा करके कार्य्यों में उपयोग कर सुखों को प्राप्त करते हैं वैसे ही सब मनुष्यों को इस यज्ञ का अनुष्ठान कर सब सुखों को पहुँचाना चाहिये।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.२२

thearyasamaj.org

परोपकारिणी सभा एवं आर्यवीर दल राजस्थान के संयुक्त तत्त्वावधान में

प्रान्तीय आर्यवीर दल शिविर

का भव्य आयोजन

दिनांक : १७ मई २०१५ रविवार से २४ मई २०१५ रविवार तक

स्थान : ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर (राज.)

सम्पर्क सूत्र : ०९००१४३४४८४

यू-ट्यूब पर वीडियो प्रवचन उपलब्ध

वेद एवं आर्ष साहित्य में रुचि रखने वाले आर्यजगत् एवं धार्मिक जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब यू-ट्यूब पर अनेक वैदिक आर्य विद्वानों के सैंकड़ों नये-नये प्रवचन उपलब्ध हैं। विश्व में कहीं पर भी इन्टरनेट से जुड़ कर ये प्रवचन निःशुल्क सुने-देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते हैं। आप जहाँ भी हैं, यदि आपको वैदिक आर्ष ज्ञान की पिपासा है, वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ आप इन पर विद्वानों के प्रवचन भी सुनना चाहते हैं, तो इन्टरनेट से जुड़ कर सरलता से सुन सकते हैं।

इसके लिए you tube पर जाकर playlist of paropkarini sabha लिख कर सर्च करें, तो आपको अनेक प्लेलिस्ट मिलेंगी, यथा- वेद प्रवचन, योग दर्शन, ईशोपनिषद् आदि। इनमें इच्छानुसार जाकर लाभ उठाया जा सकता है। आप अपने परिचितों को यह सूचना देकर उन्हें भी लाभ उठाने को प्रेरित कर सकते हैं। भविष्य में अन्य भी नये-नये प्रवचन इस सूची में उपलब्ध कराये जाते रहेंगे।

मनुष्यों को चाहिये कि अपने पुरुषार्थ से सुवर्ण आदि धन को इकट्ठा कर घोड़े आदि उत्तम पशुओं को रक्खें क्योंकि जब तक इस सामग्री को नहीं रखते तब तक गृहाश्रमरूपी यज्ञ परिपूर्ण नहीं कर सकते इसलिये सदा पुरुषार्थ से गृहाश्रम की उन्नति करते रहें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६३

जो नित्य पदार्थों में नित्य और स्थिरों में भी स्थिर परमेश्वर है, उस समस्त जगत् के उत्पन्न करने वाले परमेश्वर की प्राप्ति और योगाभ्यास के अनुष्ठान से ही ठीक-ठीक ज्ञान हो सकता है, अन्यथा नहीं।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.२५

छूट गये हैं पाप जिन के वे विद्वान् लोग अपनी विद्या के प्रकाश में जैसे ईश्वर के गुणों को देख के सत्य धर्माचारयुक्त होते हैं वैसे हम लोगों को भी होना चाहिये।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ६.५

thearyasamaj.org

वैदिक साहित्य पर विशेष छूट

दानी महानुभावों के विशेष सहयोग से वैदिक पुस्तकालय, अजमेर द्वारा प्रकाशित रु. १६३५/- मूल्य की निम्नलिखित पुस्तकों का एक सैट ग्राहकों को आधे मूल्य (५० प्रतिशत) में अर्थात् रु. ८१७/- में दिया जा रहा है। पुस्तकों को डाक द्वारा मँगाने पर डाक व्यय के रु. १८३/- अतिरिक्त सहित कुल राशि रु. १०००/- में ग्राहकों को देय होगा।

पुस्तकों के सैट उपलब्धता रहने तक प्राथमिकता के आधार पर देय होंगे।

क्र. सं.	पुस्तक सं.	पुस्तक का नाम		मूल्य
१.	१२	ऋग्वेद भाषा भाष्य-१२ पुस्तक-१ सैट		६१०.००
२.	२	यजुर्वेद भाषा भाष्य-२ पुस्तक-१ सैट		४७५.००
३.	३	दयानन्द ग्रन्थमाला-३ पुस्तक- १ सैट		५५०.००
	१७		योग	१६३५.००

पुस्तकें मँगाने हेतु धनराशि-एम.ओ., डिमाण्ड ड्राफ्ट या ऑनलाईन द्वारा
खातेदार-वैदिक पुस्तकालय, अजमेर
बचत खाता संख्या- 0008000100067176,
बैंक- पंजाब नेशनल बैंक, कचहरी रोड, अजमेर
आई.एफ.एस.सी. संख्या PUNB 0000800 के माध्यम से भेज सकते हैं।

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें। **-संपादक**

मनुष्यों को युक्ति और विद्या से सेवन किये हुए सब सृष्टिस्थ पदार्थ शरीर, आत्मा और सामाजिक सुख कराने वाले होते हैं।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५७

जो विद्वान् लोग परोपकार बुद्धि से विद्या का विस्तार करने, सुगन्धि, पुष्टि, मधुरता रोगनाशक गुणयुक्त पदार्थों का यथायोग्य मेल अग्नि के बीच में उनका होम कर शुद्ध वायु वर्षा का जल वा ओषधियों का सेवन करके शरीर को आरोग्य करते हैं वे इस संसार में अत्यन्त प्रशंसा के योग्य होते हैं।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५८

thearyasamaj.org

कुछ तड़प-कुछ झड़प

– राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

पं. लेखराम जी का बलिदान पर्वः- छह मार्च को आग्नेय पुरुष, सर्वस्व त्यागी, महाबलिदानी, आदर्श धर्मोपदेशक और जाति रक्षक पं. लेखराम जी का पावन बलिदान पर्व आर्यजन श्रद्धा व उत्साह से मनाते हैं। मुगल काल के पश्चात् इस्लामी तलवार, कटार से आर्य जाति के किसी महापुरुष का यह पहला बड़ा बलिदान था। पण्डित जी को मिर्जाई मत के पैगम्बर ने खुली धमकी दी थीः-

बतरस अज तेगे बुराने मुहम्मद

अर्थात् मुहम्मद की काटने वाली तलवार से डर। यह एक लम्बी फारसी कविता की पंक्ति है। मिर्जाइयों की इलहामी पुस्तक में लिखा है कि २८ पद्यों की इस कविता का एक पद्य अल्लाह मियाँ रचित है। यह तलवार की धमकी वाली पंक्ति उसी अल्लाह रचित पद्य की दूसरी पंक्ति है।[१] अभी दिसम्बर में पैगम्बर का वंशज और खलीफा कादियाँ आया। भारतीय मीडिया को वक्तव्य देते हुए संसार को शान्ति व भाईचारे की मीठी-मीठी बातें सुनाकर अपने पंथ का मैत्री सन्देश दिया। ये सब मगरमच्छ के अश्रु थे। कादियानी मिर्जा ने स्पष्ट शब्दों में लिखा है कि हिन्दू हमारा निकट का शिकार (सैदे करीब) है, जब चाहें दबोच लें। पं. लेखराम इस योजना में बाधक दिखाई दिये सो काट दिये गये।

सत्य के मण्डन और पाखण्ड के खण्डन में पण्डितजी का अदम्य उत्साह, निडरता, लगन व सूझ बेजोड़ मानी जाती थी।

गौरवगिरि पं. लेखरामः- एक मुसलमान विद्वान् अब्दुल्ला साहिब मिमार ने एक हृदय स्पर्शी विशेषण पण्डित जी के लिये प्रयुक्त किया है- 'कोहे वकार' अर्थात् गौरवगिरि। यह विशेषण केवल एक ही मुसलमान नेता व विद्वान् के लिए प्रयुक्त हुआ, जिसे मैं खोज पाया। यह पण्डित जी के गुणों व चरित्र की गहरी छाप का प्रमाण है। मान्य 'शरर' जी भी लेखक की इस खोज पर मुग्ध थे। खेद है, श्री पं. गुणग्राहक जी आर्योपदेशक को छोड़ कर आर्य विद्वानों ने इस सुन्दर उपाधि को प्रचारित नहीं किया।

पं. लेखराम की चर्चा अमरीका मेंः- पं. लेखराम जी इस युग के प्रथम भारतीय महापुरुष थे, जिनके बलिदान पर अमेरिका के पत्र ने अपना सम्पादकीय लिखकर श्रद्धाञ्जलि दी। खेद है, आर्यसमाज ने इस तथ्य का भी प्रचार नहीं किया।

इलहामी कोठे पर जा पहुँचेः- सत्यासत्य का निर्णय करने के लिये निडर लेखराम कई सज्जनों को लेकर नबी के इलहामी कोठे में कादियाँ जा पहुँचे। यह घटना स्वयं श्री पण्डित जी ने भी लिखी है, परन्तु सब साथियों के नाम नहीं लिखे। सिखों के 'सिन्ध सभा' पत्र का सम्पादक भी उनमें से एक था। वह पण्डित जी का अनन्य भक्त था। उसकी कुछ दुर्लभ पुस्तकें यह सेवक खोज पाया। उस सम्पादक ने लिखा है कि पण्डित जी ने पैगम्बर को चुनौती दी कि तुम अपने मत की सच्चाई के लिये 'खारिक आदात' (चमत्कार) दिखाने के विज्ञापन देते हो। दिखाओ! सृष्टि नियम विरुद्ध कोई चमत्कार, मैं मुसलमान बनता हूँ। टालते हुये मिर्जा ने कहा, मुझे यह तो पता नहीं कि अल्लाह क्या चमत्कार दिखाता है।

सम्पादक 'सिन्ध सभा' ने लिखा है कि तब दो विशेष घटनायें घटीं। पहली तो यह कि पण्डित जी ने कहा- कुरान में तो यह शब्द ही नहीं। मिर्जा अड़ गया कि कुरान में 'खारिक आदात' शब्द है। अपने झोले से कुरान निकालकर पण्डित जी ने उसके आगे रखकर कहा, 'दिखाओ कहाँ है?' वहाँ यह शब्द हो तो वह दिखावे। यह घटना मुसलमान आलमों ने भी दी है और मिर्जा को लताड़ लगा कर पं. लेखराम के कुरान के अथाह ज्ञान की भूरि-भूरि प्रशंसा की है।

दूसरी घटना केवल 'सिंध सभा' के सम्पादक जी ने लिखी है। यह पण्डित जी की विलक्षण सूझ का एक उदाहरण है। पण्डित जी ने अपनी तली पर एक शब्द लिखकर मुट्ठी बन्द करके नबी से कहा, 'अल्लाह से पूछकर बताओ कि मैंने तली पर क्या लिखा है?' मिर्जा के पसीने छूट गये। वह यह छोटा-सा चमत्कार न दिखा सका। तब सम्पादक जी ने कहा, 'पण्डित जी, आपने अपने तली पर लिखा क्या था? तनिक दिखाओ तो।' उन्होंने हाथ आगे किया जिस पर 'ओ३म्' शब्द लिख रखा था।

कार्य करना जानते थेः- पण्डित लेखराम दिन-रात, चुपचाप धर्म प्रचार व जाति रक्षा के कार्य में लगे रहते थे। बिना शोर मचाये बिछड़े भाइयों को जाति का अंग बनाया। फोटो खिंचवाने या मीडिया में अपने प्रचार की उन्हें कतई भूख नहीं थी। धर्म रक्षा के लिए ऐसे बलिदान देने वाले अमर हुतात्मा पं. लेखराम का आत्मा पुकार-पुकार कर कह रहा है-

thearyasamaj.org

हाय, कमबख्त को किस वक्त खुदा याद आया!

साठ-सत्तर वर्ष पहले इधर ध्यान क्यों न गया?

मान्य महावीर जी मीमांसक का सुन्दर लेखः- मैं अक्षर छोटे होने से पत्रों के लेख अपवाद रूप में ही पढ़ता हूँ। डॉ. महावीर जी मीमांसक के एक लेख का शीर्षक देखकर समझ गया कि आपने कुछ विशेष चिन्तन इसमें दिया है। आपने महर्षि के महाप्रयाण पर बहुत सुन्दर लेख का आरम्भ श्री डॉ. जे जार्डन्स के इस कथन से किया है कि महर्षि दयानन्द अपने उद्देश्य से भटक गये। डॉ. महावीर जी ने अत्यन्त योग्यता से इस मिथ्या कथन को झुठलाया है और लिखा है कि सत्य तो यह है कि डॉ. जोर्डन्स स्वयं ग्रन्थ लिखते हुए अपने उद्देश्य से भटक गये। डॉ. महावीर जी को भ्रान्ति-निवारण पर बधाई देते हुए बहुत विनम्रता से यह कष्ट देता हूँ कि वह इस पुस्तक की अन्य भ्रामक बातों का भी निराकरण करने के लिए अपनी लेखनी उठायें। अब तक तो केवल इस सेवक ने ही डॉ. जोर्डन्स जी की पुस्तकों से फैली भ्रान्ति का निवारण करते हुए समय-समय पर लिखा है। सब प्रकार का भ्रम भञ्जन होना चाहिये।

खेद है कि हिण्डौन से छपे एक ग्रन्थ में डॉ. जोर्डन्स का चित्र तो ऐसे दिया है कि मानो ऋषि के मिशन और ऋषि के जीवन पर पं. लेखराम, पं. चमूपति, पं. भगवद्दत्त से कहीं बढ़कर यही हैं। ऋषि जीवन के लिए अपना परिवार, घर बार, सगे सम्बन्धी सब कुछ वार देने वाले पं. चमूपति जी का उस ग्रन्थ में कहीं नाम तक नहीं। आर्यो! यह आत्मघाती सोच है।

'सद्धर्म प्रचारक' विषयक एक प्रश्नः- एक सज्जन ने फरीदाबाद से चलभाष पर प्रश्न पूछा है कि पत्रों में यह पढ़ने को मिला है कि पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द जी ने रात-रात में सद्धर्म प्रचारक को उर्दू से हिन्दी में कर दिया। क्या यह ठीक है? वह ऐतिहासिक रात कौन-सी थी?

प्रश्न अच्छा है। जो यह लिखते हैं कि 'रात-रात में.......' उनका इस वाक्य से क्या आशय है? यह तो वही बता सकते हैं, तथापि मैंने प्रश्नकर्त्ता भाई से कहा कि मैं ऐसे प्रश्नों को गम्भीरता से लेता हूँ। मूल स्रोतों के आधार पर परोपकारी में उत्तर दिया जावेगा। इस सम्बन्ध में यह निवेदन करना चाहता हूँ कि आज के लेखक जो इस विषय पर बढ़ा-चढ़ा कर लिखते हैं, उन्होंने न तो 'सद्धर्म प्रचारक' उर्दू के अन्तिम अंकों को देखा है और न ही हिन्दी सद्धर्म प्रचारक के आरम्भिक अंकों को देखा है। मुझे तो ललक रही, मैंने इन दोनों की फाईलें देखी हैं।

प्रश्न का उत्तर देने के लिए 'स्वामी श्रद्धानन्द-एक विलक्षण व्यक्ति' ग्रन्थ पर फिर से एक दृष्टि डालने का विचार आया।

परोपकारी में अनेक बार यह लिखा गया है कि आज के आर्यसमाजी लेखक एवं वक्ता महानुभाव प्रमाणों का मिलान करने की पूर्वजों की विशेषता को अपनायें। स्वामी श्रद्धानन्द विषयक पुस्तक में यह पढ़कर धक्का लगा कि २८ फरवरी १९०७ तक जालन्धर से छपता रहा और हिन्दी सद्धर्म प्रचारक १ मार्च १९०७ से गुरुकुल कांगड़ी से चलता रहा।[२] ये दोनों बातें सत्य नहीं हैं। लाला लाजपतराय के निष्कासन के समय सद्धर्म प्रचारक उर्दू में ही छपता था। स्वामी जी ने जब हिन्दी में इसे निकालने का निश्चय कर लिया, तब भी कई सप्ताह तक इसे निकाला। अन्तिम सम्पादकीय महात्मा मुंशीराम जी ने नहीं, महाशय घसीटाराम (महाशय राजपाल) ने लिखा था। लाला जी ९ मई को बन्दी बनाये गये तथा वीर अजीतसिंह दो जून १९०७ तक, अतः यह निराधार लगता है कि रात-रात में उर्दू में छपना बन्द कर पहली मार्च को कांगड़ी से पत्र छपने लगा। निश्चित तिथि तो देखकर अंक सामने रखकर लिखूँगा। स्मृति के आधार पर मुझे यही लगता है कि ग्रीष्म ऋतु में उर्दू सद्धर्म के कई अंक निकले। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने भी १ मार्च १९०७ को ही हिन्दी प्रचारक का जन्म लिखा है। सर्दी का प्रकोप कम होने पर मैं उर्दू प्रचारक की फाईल खोजकर सब कुछ स्पष्ट कर दूँगा। मेरी भूल होगी तो अवश्य क्षमा माँग लूँगा। उर्दू प्रचारक का जन्म १९ फरवरी नहीं, १३ अप्रैल को ही हुआ। यह निश्चित जानिये, श्री डॉ. जे. जोर्डन्स जी ने तो एक और भूल 'सद्धर्म प्रचारक' के साथ जोड़ दी है। जाने-अनजाने से न जाने कैसे आपने यह लिख दिया कि 'सद्धर्म प्रचारक' उर्दू सन् १८८८-१९०७ तक छपता रहा।[३]

हीन भावना से ग्रसित भारतीय बाबू गोरे लोगों की एक-एक पंक्ति को शुद्ध सत्य मानते हैं। हम जैसे भारतीय कुछ भी कहें व लिखें, वे हमें तुच्छ समझते हैं यह ठीक है कि साधन सम्पन्न पश्चिमी लेखक बहुत श्रम करते हैं, परन्तु आचार्य उदयवीर जी और पं. भगवद्दत्त जी से अधिक तत्त्वज्ञानी व प्रामाणिक तो नहीं हो सकते।

मित्रो! 'सद्धर्म प्रचारक' की पहले अंक की एक फाईल मेरे सामने रखी है। इसके प्रथम वर्ष का ग्यारहवाँ अंक मेरे सामने पड़ा है। इस पर २२ जून सन् १८८९ तिथि छपी है। देशी तिथि १० आषाढ़ सं. १९४२ दी है। अब निर्णय आप कर लें कि यह पत्रिका सन् १८८९ में निकली अथवा १८८८ ई. में। हम डंके की चोट से बताते हैं कि

thearyasamaj.org

सद्धर्म प्रचारक का जन्म १३ अप्रैल को वैशाखी के दिन हुआ था। भूलचूक हो जाये तो उसे स्वीकार करने तथा सुधारने में ही आर्यत्व है।

मेरी एक भूल:- मेरठ की एक स्मारिका आर्य शिखा में मेरे छपे खोजपूर्ण लेख में दो बार क्रान्तिकारी भगवती चरण वोहरा के नाम में अनजाने से बोहरा की बजाय 'वर्मा' छप गया है। इसका मुझे भारी खेद है।

यह क्या मारा?:- अकस्मात् एक दिन दिल्ली में श्री पूर्णसिंह जी डबास प्रधान आर्यसमाज साकेत दिल्ली से भेंट हो गई। आपसे समाज की एक स्मारिका मिल गई। आपने उसकी समीक्षा करने का अनुरोध किया। मैंने परोपकारी के दिसम्बर प्रथम अंक में श्री डबास के गुणों का वर्णन करते हुए समीक्षा कर दी। समीक्षा क्या कर दी डबास जी तो व्याकुल हो गये। पहले स्वयं चलभाष पर मेरी पूछताछ करके कई प्रश्न किये। क्या आपने स्मारिका देखी? क्या पढ़ी? क्या सुन-सुनाकर परोपकारी में लिख दिया, इत्यादि। मैंने समुचित उत्तर देते हुए विनम्रता से कहा, कुछ तथ्यहीन लिखा गया है तो मेरी भूल बता दें। मैं अपनी भूल पर खेद प्रकट करके सुधार कर दूँगा।

आपने कहा, ''हमने स्मारिका श्री विनय आर्य को भेंट (समर्पित) नहीं की।'' फिर कहा, ''उसमें ऋषि दयानन्द का चित्र छपा है। ओशो व दलाई लामा की सूक्तियाँ दी हैं, वे अच्छी हैं।'' मैं उन्हें कह चुका कि स्मारिका को किसी को दे बैठा हूँ। आप फिर भेज दें। मैं पुन: देखकर लिख दूँगा। एक-एक वाक्य तो मैंने पढ़ा नहीं था। विहंगम दृष्टि से देखकर- बस अब तो इनको एक हथियार मिल गया। पहले इनके समाज की सचिव (मन्त्री नहीं) जी ने ३१ दिसम्बर को मुझे लिखा कि सन् २०१० में हमने स्मारिका प्रकाशित की, फिर कोई नहीं छापी। दस दिसम्बर को भी आपने एक पत्र में मेरी डबास-शैली में पूछताछ की। वैदिक धर्म पर वार कोई भी करे तो यह मण्डली सदा चुप्पी साध लेती है।

११ दिसम्बर को एक अनिल विद्यालंकार जी ने लम्बा पत्र धर्मवीर जी को लिखा, उसमें स्मारिका लखीराम कटारिया को भेंट करना लिखा है। ऋषि का चित्र देना अनिवार्य नहीं समझते। ओशो और दलाईलामा के वचन देने, वेद की सूक्ति, मन्त्र, ऋषि वचन, किसी पूज्य प्रतिष्ठित विद्वान् का किसी मुख्य सिद्धान्त पर लेख न देने पर इन्हें कोई पश्चात्ताप नहीं। 'ओ३म्' तक भी मुखपृष्ठ पर नहीं। अनिल विद्यालंकार जी ने सीमा का उल्लंघन करते हुये 'कुछ तड़प, कुछ झड़प' स्तम्भ शीर्षक को शालीनता से परे घोषित कर दिया है।

आर्य जनता इस पर मेरी प्रतिक्रिया नोट कर ले। कहीं अन्यत्र भी कभी लिखूँगा। धर्मवीर जी को स्मारिका का भेंट का पृष्ठ तथा स्मारिका के सम्पादकीय के अन्त में २७ अप्रैल २०११ की तिथि का फोटो भेज दिया है। स्मारिका मेरे पास आ गई है। किसी आर्य बलिदानी विद्वान् का कोई चित्र नहीं। भेंट श्री विनय की ही की गई- यह छपा है। न जाने इनको सत्य की हत्या करके क्या मिल गया? अविद्या अन्धकार का संहार करता रहा हूँ, मरते दम तक करूँगा। यह अनिल जी विद्यालंकार नोट कर लें। मेरी हड्डियाँ मार-मार कर तोड़ दी गईं। एक बार लिखा था- 'नेहरूशाही ने दण्डा गुदा में दिया' मैं फिर भी न दबा, न डरा और न पीछे हटा। अभी सिर पर १३ टाँके लगे हैं। यातनायें दु:ख कष्ट सहकर गौरवान्वित हूँ, मस्त हूँ। परन्तु डबास जी और इनकी टोली ने जो गढ़-गढ़ कर निराधार बातें लिखकर मुझ पर वार प्रहार किये हैं, उस पर कवि की पंक्तियाँ गुनगुनाता हूँ:-

तफंगो तीर तो जाहिर न था कुछ पास कातिल के,
इलाही फिर भी दिल पर ताक के मारा तो क्या मारा।

लगभग ५० वर्ष से यह स्तम्भ आर्यजगत् में कई पत्रों में छपता चला आ रहा है। पूज्य उपाध्याय जी, पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी, आचार्य उदयवीर जी, आचार्य प्रियव्रत जी, पं. शान्तिप्रकाश जी, महात्मा आनन्द स्वामी जी, क्रान्तिवीर पं. नरेन्द्र जी, स्वामी सर्वानन्द जी, ठाकुर अमरसिंह जी, पूज्यपाद देहलवी जी तो इस स्तम्भ को इसी शीर्षक से पढ़कर आशीर्वाद व बधाइयाँ देते रहे। अनिल ने इन सब महापुरुषों तथा पं. उमाकान्त पर शालीनता से परे होने का दोष लगाया या गाली दी है। हम क्या कहें? आपके ज्ञान व शालीनता तथा सोच का क्षेत्रफल आपके पत्रों से पता चल गया। देश के नहीं विदेशों के आर्यों के तड़प-झड़प पर चलभाष से उद्‌गार सुनकर मैं गद्‌गद् होता हूँ।

लाला लाजपतराय जी का १५०वाँ जन्म दिवस:- देश जाति पर बलिदान देने वाले निर्भीक और त्यागी राष्ट्रीय नेता लाला लाजपतराय के १५०वें जन्मदिवस को २८ जनवरी २०१६ तक देश भर में मनाया जायेगा। लाला जी परोपकारिणी सभा के आरम्भिक काल में अजमेर आते रहे। सभा को उनकी सेवायें प्राप्त रहीं। वर्ष भर लाला जी के विषय में प्रेरणाप्रद सामग्री लेखों व कविता के रूप में दी जावेगी। मैंने तो पहले भी लाला जी पर बहुत कुछ लिखा, उनके जीवन पर मेरी दो पठनीय पुस्तकें छपीं। एक अब भी प्राप्य है।

परोपकारिणी सभा इस महापर्व के लिए जो प्रथम

thearyasamaj.org

पुष्प देशवासियों को भेंट करने जा रही है, उसे तैयार करने की सभा ने इस सेवक को आज्ञा दे दी है और मैं अपने कार्य में जुट गया हूँ। लाला जी के लोक सेवक मण्डल ने भी मेरी सेवायें माँगी हैं, मैं लाला जी की इस संस्था को भी जी जान से सहयोग करूँगा। लाला जी की लिखी तथा लाला जी विषयक दुर्लभ पुस्तकों में से एक का प्रथम संस्करण मेरे पास देखकर आज एक समाज सेवी ने उसे लेकर माथे से लगा लिया। सभा के सब कर्णधारों को सोच-विचार कर स्थायी महत्त्व के कुछ और कार्य करने का संकल्प करना चाहिये।

एक खोजपूर्ण मौलिक पुस्तकः- पिम्परी पूना के हमारे मान्य आर्य भाई श्री हरिकिशन जी एक समर्पित, कर्मठ, प्रेमल, गवेषक, लेखक आर्य मिशनरी हैं। उच्च शिक्षित हैं। लगभग पचास वर्ष से मेरा उनके परिवार से सम्बन्ध है। इस बार ऋषि मेला पर भी आये थे। आपने कुछ वर्ष पूर्व ईसाई मत पर एक रोचक शोधपूर्ण पुस्तक लिखी। इसकी जानकारी मिलते ही मैंने इस विषय की अपनी पुस्तक अधूरी छोड़ दी। श्री लाजपतराय अग्रवाल ने कुछ वर्ष पूर्व इसे छापने के लिये लेकर मेरे से प्राक्कथन भी लिखवा लिये, फिर इसे लटकाकर विद्वान् लेखक को और साथ ही मुझे भी टालने की नीति अपनाई।

अब पूना में यह पुस्तक प्रेस में है। प्राक्कथन नये सिरे से लिखूँगा। सभा को छपते ही इसकी दो प्रतियाँ प्राप्त हो जायेंगी। प्राणवीर पं. लेखराम, लाला काशीराम, स्वामी वेदानन्द, महात्मा नारायण स्वामी, पूज्य उपाध्याय के पश्चात् ईसाई मत पर अत्यन्त ठोस, पठनीय, रोचक व मौलिक पुस्तकें लिखने का गौरव आपको प्राप्त हो रहा है। वर्तमान में आर्यसमाज में ईसाई मत सम्बन्धी साहित्य का आपका अध्ययन आर्यसमाज के लिये बहुल गौरव का विषय है। ऋषि दयानन्द, पं. लेखराम, स्वामी वेदानन्द के आरम्भ किये कार्य को आपने आगे बढ़ाया है। घर-घर में यह पुस्तक पहुँचे। हम सब इसके प्रसार में लेखक के सहयोगी बनें। पं. लेखराम जी का वंश फूलता-फलता रहे, मेरी यही कामना है।

सन्दर्भ

१. द्रष्टव्य- 'हकीकत उल वही' ग्रन्थ, पृष्ठ २८८
२. द्रष्टव्य- 'स्वामी श्रद्धानन्द-एक विलक्षण व्यक्तित्व', पृष्ठ ४९ तथा ५५
३. द्रष्टव्य- श्रद्धानन्द अंग्रेजी पुस्तक, पृष्ठ १९८, लेखक- डॉ. जे. जोर्डन्स

- वेद सदन, अबोहर, पंजाब-१५२११६

पं. लेखराम जी के प्रति

क्या अन्त तेरा हो गया?

– प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

ऋषि वाटिका सींची अरे, अपने लहू की धार से।
तूने अमर पद पा लिया उपकार से उपकार से।।
ईश्वर की वाणी वेद पर
तेरा अटल विश्वास था।
निर्भीक होकर गर्जना
तेरा यह गुण इक खास था।।
जीते विरोधी सैकड़ों निज तर्क की तलवार से......
परिवार का घर-बार का
तुझको न कुछ भी ध्यान था।
बस लक्ष्य तेरा वीरवर
बलिदान था, बलिदान था।।
क्या अन्त तेरा हो गया, तीखी छुरी की धार से......
गाथा पथिक तेरी पथिक
देती अनूठी प्रेरणा।
करता रहा संसार में
सञ्चार प्रतिपल चेतना।।
जन मन में कैसे घुस गया? अपने मृदुल व्यवहार से....
तू ज्ञान का भण्डार था,
तेरी निराली शान थी।
सिर धर तली फिरता रहा,
तेरी यही पहचान थी।।
गूँजेगी जगती यह सदा, तेरी पथिक जयकार से....
वाणी में तेरी ओज था,
उर में तिरे उद्गार थे।
बेटा भी प्यारा दे दिया,
दिल में तिरे अङ्गार थे।
जीवन सुशोभित कर गया तप त्याग के सिङ्गार से.....

- वेद सदन, अबोहर, पंजाब

thearyasamaj.org

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में पिछले लगभग एक वर्ष से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ नि:शुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**10158172715**

IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम-**आई.डी.बी.आइ**, पावर हाऊस के सामने,

जयपुर रोड़, अजमेर।

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**091104000057530**

IFSC-IBKL0000091

email : psabhaa@gmail.com

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

आस्था भजन (चैनल) पर आर्य विद्वानों के प्रवचन

स्वामी रामदेव जी जन-जन के कल्याण को ध्यान में रखते हुए वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए 'आस्था-भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे तक दो घण्टे के बीच वैदिक विद्वानों के प्रवचनों को प्रसारित करवा रहे हैं।

इस कार्य में परोपकारिणी सभा द्वारा भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रवचनों की आपूर्ति के लिए ऋषि उद्यान में रिकॉर्डिंग-यूनिट चल रही है और लगातार नित नये प्रवचनों की रिकॉर्डिंग की जा रही है। परोपकारिणी सभा ये प्रवचन आस्था-भजन (चैनल) को प्रदान कर रही है।

इन दिनों 'आस्था-भजन' (चैनल) पर प्रतिदिन सायं ७ से ७.२० बजे तक **आचार्य धर्मवीर** के वेद-प्रवचन, ७.३० से ७.५० तक **स्वामी विष्वङ्** के योगदर्शन प्रवचन, ८.३० से ८.५० तक **आचार्य सत्यजित्** के प्रवचन प्रसारित हो रहे हैं। इसी प्रकार आगे भी 'आस्था-भजन' पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे के बीच अन्य विद्वानों के व अन्य विषयों पर प्रवचन प्रसारित होते रहेंगे।

धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

'आस्था-भजन' (चैनल) डिश-टी.वी. और डी.टी.एच. पर उपलब्ध है, किन्तु टाटा-स्काई, वीडियोकोन, बिग-टी.वी. आदि पर नहीं आ रहा है। जिनके पास ये नहीं आ रहा है, वे अपने प्रसारक (सर्विस प्रोवाइडर) को बार-बार कह कर प्रेरित करते रहें, जिससे कि ये भी आस्था भजन को प्रसारित करने लगें। ऐसा करके वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार में आप भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं। जो केबल से देखते हैं, वे भी अपने केबल ऑपरेटर को कह कर आस्था भजन आरम्भ करवा सकते हैं।

thearyasamaj.org

भारतीय जी की शोध व्यथा-कथा

- ओममुनि वानप्रस्थी

दिल्ली से स्वामी अग्निवेश के साप्ताहिक समाचार-पत्र वैदिक सार्वदेशिक में भवानीलाल जी का एक लेख 'आर्यसमाज में उच्चतर शोध की स्थिति सन्तोषप्रद नहीं' शीर्षक से अंक २९ जनवरी से ४ फरवरी, पृष्ठ संख्या ०६ पर प्रकाशित हुआ है। इस लेख के शीर्षक से लेखक के पीड़ित होने का तो पता लग रहा है, परन्तु पीड़ा आर्यसमाज के शोध को लेकर है या परोपकारिणी सभा को लेकर है, क्योंकि भारतीय जी सभा के सम्मानित सदस्य और अधिकारी भी रहे हैं, इस प्रकार यह बात पाठक को पूरा लेख पढ़ने के बाद ही स्पष्ट हो पाती है।

लेख में जिन-जिन शोध संस्थाओं की तथा शोध विद्वानों की चर्चा की है, उन संस्थाओं के विद्वान् दिवंगत हो चुके हैं या फिर उन संस्थाओं का वर्तमान में शोध कार्यों से कोई विशेष सम्बन्ध देखने में नहीं आता। डॉ. भारतीय जी की पीड़ा को समझने के लिए उन्हीं की शब्दावली को पहले देख लेने से पीड़ा का कारण समझने में सहायता मिलेगी, वे व्यथापूर्ण शब्द इस प्रकार हैं- ''इधर अजमेर में परोपकारिणी सभा ने कुछ वर्ष पूर्व करोड़ों रुपये व्यय कर ऋषि उद्यान में विशाल बहुमंजिला भवन तो खड़ा कर लिया, परन्तु रिसर्च के नाम पर शून्य है। केवल ऋषि मेले के समय चार दिनों के लिये यह भवन काम में आ जाता है, अन्यथा शोध के नाम पर यह सब आडम्बर ही है। यह अवश्य हुआ है कि सत्यार्थप्रकाश के संशोधित ३७वें संस्करण ने एक नया विवाद अवश्य खड़ा कर दिया है। पं. मीमांसक तथा पं. रामनाथ वेदालंकार की उपेक्षा की गई और विसंवाही स्थिति बनी। तो संस्थाओं द्वारा प्रारम्भ किये गये शोध प्रकल्पों का अन्तत: यह हश्र देखा गया।''

इन पंक्तियों के उत्तर में सभा ने क्या शोध कार्य किये, कराये हैं और करा रही है? यह सब परोपकारी पत्रिका के माध्यम से सर्वविदित है। फिर उस विवरण से भारतीय जी की पीड़ा तो शान्त होने से रही, क्योंकि पीड़ा के कारण दूसरे हैं जिनका इस प्रसंग में उल्लेख करना उचित होगा।

भारतीय जी को करोड़ों रुपये व्यय करके विशाल बहुमंजिला भवन रिसर्च के नाम पर शून्य लगता है और शोध के नाम पर आडम्बर। भारतीय जी को पता नहीं कि भवन में क्या होता है, कोई बात नहीं, किन्तु जिस जनता ने करोड़ों रुपये सभा को दान दिये, डॉ. जी की दृष्टि में तो उन बेचारों ने गलती ही की होगी। भवन की भव्यता पर एक आर्यसमाज प्रेमी ने वास्तुकार माणकचन्द राका जी से कहा- आपने ऋषि उद्यान में इतना विशाल भवन बनाकर पैसों का अपव्यय ही किया है, तब राका जी ने उस प्रेमी से पूछा- क्या सैंकड़ों और हजारों करोड़ों रुपये लगाकर जब एक भव्य होटल बनाया जाता है और जिसमें शराब की बोतल आधी नंगी लड़कियाँ पीती हैं, क्या वहाँ कभी इस अपव्यय का विचार आपके मन में आया है? फिर यहाँ कुछ साधु, संन्यासी, ब्रह्मचारी, विद्वान् लोग शास्त्रों को पढ़े-पढ़ायेंगे तो आपके मन में अपव्यय जैसी बात कैसे आई? वह बेचारा तो चुप रह गया, परन्तु भारतीय जी की पीड़ा उस भवन को लेकर अभी तक शान्त नहीं हुई। भारतीय जी की दानशीलता के सभा पर कितने उपकार हैं, उनको स्मरण किया जाना अनुचित नहीं होगा। जब महर्षि की बलिदान शताब्दी मनाई गई तो आर्यजनों ने सभा व समारोह के लिए लाखों रुपये का दान एकत्रित करने के लिए कुछ महत्त्वपूर्ण लोगों को रसीद बुक दी हैं। समारोह सम्पन्न हुआ। समारोह की दक्षिणा लेने के पश्चात् भारतीय जी ने एक भी रसीद बिना काटे कोरी रसीद बुक सभा को लौटाने का कार्य किया, फिर भी करोड़ों रुपये का भवन बन गया, इस शोध का बोध है या नहीं, पता नहीं।

अजमेर, चण्डीगढ़, जोधपुर रहते हुए अपनी प्रतिदिन भेजी जाने वाली व्यक्तिगत डाक के पैसे वे अजमेर निवास के समय से सभा से निरन्तर माँगते और लेते रहे हैं, जिनके बन्द कर दिये जाने से 'सभा का शोध कार्य रुक गया', यह अनुभूति होना बहुत स्वाभाविक है। भारतीय जी को सभा द्वारा अपनी तथाकथित उपेक्षा का दु:ख बहुत दिनों से व्यथा दे रहा है, सभा की निन्दा करने जैसा शुभ कार्य आपने अपनी आत्मकथा में भी किया है।

नवजागरण के पुरोधा पुस्तक लिखकर सार्वदेशिक सभा में रखी गई, वहाँ नहीं छप सकी तो सभा मन्त्री श्रीकरण शारदा जी को शताब्दी के अवसर पर छपवाने के लिये प्रार्थना की और उन्होंने वह छाप दी तथा छपने के बाद स्वामी सत्यप्रकाश जी के माध्यम से रॉयल्टी की माँग की और कुछ सौ पुस्तकें लेकर माने। ऊपर से कलम में यह भी कहने का दम रखते हैं कि जिस सभा के संस्थापक का मैंने शोध पूर्ण जीवन लिखा है, उस सभा को मेरा कृतज्ञ

thearyasamaj.org

होना चाहिए, इसके विपरीत यह सभा मेरी उपेक्षा करती है। यह शोध सभा में आजकल सच में नहीं हो रहा।

परोपकारी के सम्पादन का भार तो डॉ. जी ने उठाया और उसमें शोधपूर्ण लेख तो कभी भी देखे जा सकते हैं। इस प्रसंग में शोध की बात यह है कि समीक्षा के नाम पर आई पुस्तकों की समीक्षा करके पुस्तक बेचकर पैसे जेब में रखने से अच्छा शोध और क्या हो सकता है? इस क्रम में एक प्रसंग याद आ रहा है। भारतीय जी की चण्डीगढ़ से भेजी समीक्षा नहीं छपी। भारतीय जी द्वारा कारण पूछने पर उन्हें बताया गया कि समीक्षा के लिए पुस्तक की दो प्रतियाँ आती हैं- एक समीक्षक को मिलनी चाहिए, एक सभा को, तो मान्य भारतीय जी ने अपना शोध कौशल दिखा दिया। एक फर्जी बिल भारतीय साहित्य सदन के नाम से बनाया और समीक्षा के लिए आई पुस्तकों के सभा से ही पैसे वसूल कर लिए, इसे कहते हैं शोध। वह बिल बुक भारतीय जी के काम आज भी आ रही होगी। बिल सभा के संग्रह में शोभायमान है।

भारतीय जी जानते हैं, संस्था समाजों से अभिनन्दन कराने से प्रतिष्ठा भी मिलती है और इस बहाने धन भी मिल जाता है। भारतीय जी ने अपने शिष्यों, मित्रों के माध्यम से अभिनन्दन समारोह का उपक्रम किया। प्रश्न था अभिनन्दन ग्रन्थ छपवाने का। वे सभा के सम्मान्य सदस्य भी थे, उन्होंने सभा से कहा- ग्रन्थ प्रकाशित कर दें। मेरे शिष्य लोग इसका व्यय दे देंगे। सभा ने अभिनन्दन ग्रन्थ तो छाप दिया, ग्रन्थ भी छप गया, भेंट का पैसा भारतीय जी को मिल गया, है न कमाल का शोध। सम्भवत: आजकल सभा ऐसा शोध न कर पा रही हो।

आर्यसमाज के एक प्रतिष्ठित विद्वान् थे, वे अपने बड़े पुस्तकालय की सदा चर्चा करते थे। पं. जी के अन्तरंग मित्र जो उनसे परिहास में पूछ लिया करते थे कि पं. जी इनमें से खरीदी हुई कितनी हैं और कबाड़ी हुई कितनी? लगभग वही कहानी भारतीय जी के शोध पुस्तकालय की है। सभा में शोधार्थी आते रहते हैं, एक बार एक छात्रा दयानन्द विश्वविद्यालय अजमेर से ऋषि दयानन्द विषयक शोध कार्य कर रही थी, उसे सभा के कार्यकर्त्ताओं ने परामर्श दिया, जोधपुर जाकर भारतीय जी के पुस्तकालय की भी सहायता तुम्हें लेनी चाहिए, वहाँ आर्यसमाज और ऋषि दयानन्द विषयक प्रचुर सामग्री है। उस छात्रा ने जोधपुर जाकर पुस्तकें देखीं, उसे सामग्री भी मिली परन्तु शोध की बात यह है कि छात्रा ने कहा- परोपकारिणी सभा के पुस्तकालय की दुर्लभ पुस्तकें तो भारतीय जी के संग्रहालय में हैं, तब सभा के कार्यकर्ता को कहना पड़ा कि वहाँ भी सभा का ही पुस्तकालय है। इस बहुचर्चित पुस्तकालय के नाम पर एक और संस्था भी भारतीय जी के शोध का शिकार हो गई। उस संस्था के संचालक ने भारतीय जी से कहा- आपके बाद तो कोई इनका उपयोग करने वाला नहीं हैं, आप अपना पुस्तकालय हमारी संस्था को बेच दें जैसा सुना जाता है भारतीय जी डेढ़ लाख रुपये माँग रहे थे और संस्था वालों ने उन्हें ढाई लाख रुपये दिये। इसमें शोध की बात यह है कि इस सौदे में महत्त्वपूर्ण पुस्तकें फिर बचाली गईं। हो सकता है फिर कोई शोध करने का अवसर मिल जाये। आज वहाँ के पुस्तकालय में जाकर सभा की मोहर लगी पुस्तकें देखी जा सकती हैं।

यदि कोई व्यक्ति सभा का अधिकारी होकर दुर्लभ पुस्तकें निकाल कर ले जाये तो यह शोध प्रेम ही कहा जायेगा। दुनिया में पैसे से तो सभी प्रेम करते हैं। उलटे-सीधे बिल बनाते हैं, यह तो समाज की मान्य परम्परा है, इसप्रकार शोध प्रेमियों को किसी भी प्रकार खरीदकर, उधार लेकर (बाई, बोरो एण्ड स्टील) पुस्तक प्राप्त करने का अधिकार पुराने ज्ञान मार्गियों ने दिया है। यह शोध कार्य का ही प्रमाण है।

स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने दयानन्द आश्रम के भवन में भारतीय जी को जिन शब्दों से सम्बोधित किया था वे शब्द आज भी उन्हें स्मरण होंगे। भारतीय जी ने रामनाथ जी वेदालंकार और युधिष्ठिर मीमांसक जी की उपेक्षा करने का आरोप लगाया है, सत्यार्थप्रकाश में जो भी कार्य किया गया है, वह सब विद्वानों के सामने है, और इनको जाँचने का सबको अधिकार है। इसमें आप भी शोध कार्य कर सकते हैं। सभा की दृष्टि में जो सर्वोत्तम हो सकता है उसे ही प्रस्तुत करने का प्रयास रहा है। पुस्तक आपके सामने है, आप जो भी त्रुटि बतायेंगे उसपर सभा अवश्य विचार करेगी। सभा ने सदा ही सुझावों को आमन्त्रित किये हैं, प्राप्त सुझाओं का स्वागत भी किया है। यदि विवाद हुआ है तो उस मण्डली के सदस्य भी भारतीय जी थे।

इसके आगे भी यदि सभा के शोध कार्य के विषय में कोई प्रश्न भारतीय जी उठायेंगे तो उनका सप्रमाण उत्तर दिया जा सकेगा। अब तक सभी प्रश्नों और आरोपों का उत्तर दिया जा चुका है।

\- ब्यावर, अजमेर

thearyasamaj.org

स्मृति और समझ

- ब्र. कश्यप कुमार

स्मृति और समझ में क्या अन्तर है इस विषय पर विचार करते हैं। यह स्मृति और समझ एक ही है या भिन्न-भिन्न? उत्तर यही है कि ये दोनों भिन्न-भिन्न है। स्मृति क्या है? जो ज्ञान नहीं उस ज्ञान का होना या जो ज्ञान है उसका अभिव्यक्त होना? यदि इन दोनों में से कोई एक भी प्रतिज्ञा करे तो तुरन्त ही एक प्रश्न प्रस्फुटित होता है। ये समझ जो ज्ञान नहीं था उसका होना है अथवा जो ज्ञान है उसका अभिव्यक्त होना है? आगे चर्चा को चर्चित करने से पूर्व उत्पन्न होना और अभिव्यक्त होना, एक उदाहरण के माध्यम से इन दोनों में भेद जानते हैं। उत्पन्न होना अर्थात् जो वस्तु पहले नहीं थी जैसे घर, अब वह वस्तु उत्पन्न हुई या यूँ कहे कि उस वस्तु का प्रादुर्भाव हुआ और वह घर दिखाई पड़ा तो इसे उत्पन्न होना कहा जाता है। तथा अब वह घर अन्धकार में होने के कारण से दिखाई नहीं पड़ता और प्रकाश से वह दिखाई देने लगा इसे अभिव्यक्ति कहते, इसे प्रकट होना कहते हैं। तो स्मृति या समझ जो है वे उत्पन्न होते हैं या प्रकट । इसका उत्तर अब तक तो यही समझ में आता है कि ज्ञान-समझ जो है यह तो उत्पन्न होता है। पर स्मृति उत्पन्न भी होती है और प्रकट अभिव्यक्त भी होती है। अभ्युपगम से माने की ज्ञान उत्पन्न नहीं होता तो क्या समस्या या दोष आ सकता है। जिस काल में आपको २+२=४ समझ में नहीं आ रहा था उससे भिन्न काल में समान परिस्थिति में वह समझ में आया। अब यदि यह कहें कि यह समझ तो अभिव्यक्त हुई है। तो सीधा प्रश्न होगा उस काल में वह क्यों कर प्रकट न हो सकी। उस काल में भी तो आत्मा रूपी मेमोरी में वह ज्ञान तो था ही फिर प्रकट होना चाहिये पर नहीं हुआ। इसमें एक दूसरा हेतु यह भी बन सकता है। यदि ज्ञान पूर्व से वहाँ पर है तो उसका आवरण बताना होगा। परन्तु आवरण तो कोई उपलब्ध होता नहीं दिखाई पड़ता । एक हेतु और बन सकता है। यदि पूर्व से ही ज्ञान वहीं पर है तो वह चिन्तन-मनन से होना चाहिये था जो कि नहीं हुआ। इससे अतिरिक्त दूसरा हेतु यह भी है जब हम पढ़ते-पढ़ाते हैं तो पुस्तकादि की आवश्यकता नहीं होनी चाहिये पर आवश्यकता तो होती ही है। और यदि बिना पुस्तकादि से ज्ञान हो भी रहा है तो वह ज्ञान को ही तो स्मृति ज्ञान कहते हैं। और स्मृति ज्ञान को प्रकट होना पीछे कहकर आये हैं। तब तो यह मन्त्र अनर्थ होगा-

यस्मिन्नृचः सामयजूँषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः।
यस्मिँश्चित्तं सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।।

कोई अर्थ नहीं होगा। जब प्रकट मानते हैं तो इस मन्त्र का अर्थ अनर्थ ही होगा। पर यदि उत्पन्न माने तो इसका अर्थ "सामर्थ्य" से करेंगे कि ऋग्यजुस्साम को हमारे अन्दर प्रतिष्ठित करने का सामर्थ्य है। यदि पूर्व ही प्रतिष्ठित है तो अध्ययन करने की क्या आवश्यकता है। चिन्तन मननादि से कर लेंगे। पर ऐसा नहीं होता अतः स्पष्ट है कि ज्ञान हमेशा उत्पन्न होता है। और 'उत्पन्न होता है' ऐसा माने तो मन्त्र का कोई अर्थ नहीं होता। और कोई कहे कि -

इच्छाद्वेषप्रयत्नसुखदुःखज्ञानानि आत्मनो लिङ्गम्।

इस सूत्र में महर्षि गौतम ने ज्ञान गुण तो आत्मा का बताया। तो इसमें भी वही उत्तर बनता है कि आत्मा का सामर्थ्य है ज्ञान गुण को धारण करने का, नहीं तो ज्ञान सदा होना चाहिये पर ऐसा नहीं होता। इससे पता चलता है कि ज्ञान को ग्रहण करने का सामर्थ्य है न कि ज्ञान स्वयं आत्मा में है।

अब स्मृति की जहाँ तक बात है तो वह भी वास्तव में तो उत्पन्न ही होती है। परन्तु उसका अभिव्यक्त होना जो व्यवहार होता है वह गौण कथन मात्र है। क्योंकि महर्षि कणाद ने सभी ज्ञान को उत्पन्न होना ही माना है। इसमें प्रमाण-

आत्मान्यात्ममनसोः संयोगविशेषादात्मप्रत्यक्षम्।
तथा द्रव्यान्तरेषु प्रत्यक्षम्।
अस्येदं कार्यं कारणं संयोगि विरोधि समवायि चेति लैङ्गिकम्।
एतेन शाब्दं व्याख्यातम्।
आत्ममनसोः संयोगविशेषात् संस्काराच्च स्मृतिः।
तथा स्वप्नः।
स्वप्नान्तिकम्। धर्माच्च।

इससे पता चलता है कि चाहे प्रात्यक्षिक ज्ञान हो या लैङ्गिक ज्ञान हो अथवा शाब्दिक ज्ञान हो वा स्मार्त ज्ञान हो, क्यूँ न स्वानस्थ ज्ञान हो सभी ज्ञान उत्पन्न ही होते यही इन सूत्रों के माध्यम से तथा कर्ण परम्परा से पता चलता है।

thearyasamaj.org

इससे शब्दप्रमाण से सिद्ध होता है कि ज्ञान उत्पन्न ही होता है। स्मृति ज्ञान शब्दज्ञानादि से भिन्न ज्ञान है इतना ही अन्तर है। है तो वह भी ज्ञान ही।

आईये। अब स्मृति को लेकर कुछ और जानते हैं। कई व्यक्ति तो शीघ्र स्मरण कर लेते हैं। कोई-कोई शीघ्रता से स्मरण नहीं कर पाते। और इससे अतिरिक्त कोई-कोई शीघ्र समझ लेते हैं पर शीघ्र स्मरण नहीं कर पाते। और कोई-कोई शीघ्र स्मरण कर लेते हैं पर शीघ्र समझ नहीं पाते। और कोई-कोई ऐसे भी होते हैं जो शीघ्र समझ और स्मरण दोनों ही कर लेते तथा कई दोनों ही विलम्ब से कर पाते हैं। इसमें मुख्य कारण संस्कार एवं पुरुषार्थ ही समझ में आता है। मान कर चले किसी देवदत्त ने सूत्र को पाँच बार बोला और उसे जट से याद हो गया पर उसी सूत्र को उसी काल में उस स्थान पर ही पच्चीस बार बोलने वाला यज्ञदत्त स्मरण नहीं कर पा रहा है। इसमें स्पष्ट कारण जो समझ में आता है वह पुरुषार्थ है। उतने ही काल में पाँच बार और उतने ही काल में पच्चीस बार यह पुरुषार्थ की कमी को दर्शाता है। पच्चीस बार बोलने वाले ने मानसिक एकाग्रतादि का ध्यान न रखकर स्मरण करने का प्रयास किया अत: उसे स्मरण नहीं हुआ। और यदि पूर्व संस्कार नहीं हो तो भी याद नहीं हो पाता है। क्यों न उसकी एकाग्रता हो पर पूर्व संस्कार भी साथ दे तो अवश्य याद होना चाहिये। (पूर्व संस्कार स्मरण वाले न कि और कोई)। यह एक स्थूल उदाहरण मात्र दिया है उससे समझ लेना चाहिये। दृष्टान्त को दृष्टान्त में घटायेंगे तो अवश्य ही समझ में आ जायेगा।

अब स्मरण यदि शीघ्रता से करना चाहते हैं तो किन-किन विषयों पर ध्यान देना आवश्यक है यह मैं अपनी समझ के आधार पर कुछ बात रखता हूँ। कोई भी व्यक्ति यदि गीत रूपक बनाकर उसे स्मरण करे तो शीघ्र याद हो सकता है क्योंकि व्यक्ति की रुचि संगीत में प्राय: ज्यादा देखी जाती है। और जिस व्यक्ति को संगीत पसंद है तो वह संगीत जैसा गद्य अथवा पद्य बनाकर उसे यादकर ले तो शीघ्र याद हो सकता है। और जहाँ रुचि बनती है वहाँ पुरुषार्थ की अल्पता भी देखने में नहीं आती। संस्कार-पुरुषांर्थ-रुचि और संकल्प ये चार चीज हैं। तो वह किसी भी बाधा का सामना कर सकता है। अन्य सहायक कारण ये भी हैं या बन सकते हैं। यदि व्यक्ति जिस वस्तु को याद करना चाहता है उसे समझ ले तो भी शीघ्र स्मरण कर लेता है। और यदि कठिन है समझ नहीं सकते तो अपनी समझ के अनुसार उसे ढाल ले तब भी तीव्रता से याद हो सकता है। अथवा कथा रूपक बना ले उसके शब्दों को इधर-उधर जोड़ ले नाटक तैयार कर ले तब भी शीघ्र याद हो जाता है। और मानसिक एकाग्रता हो तो भी शीघ्र स्मरण होने की आशा रहती है। स्मरण करने की विधि यदि सही कर ली जाये दस-दस सूत्र के स्थान पर पाँच-पाँच सूत्र करे तो भी तीव्रगति से याद हो सकता है। समय भी इसमें कारण बनता है यदि प्रात: काल ब्रह्ममुहूर्त में स्मरण करें तो अन्य काल की अपेक्षा से शीघ्र याद होता है जो शीघ्र याद कराने के हेतु बनते हैं। ये सब कारण तो है ही। पर ये सब गौण है। मुख्य संस्कार-रुचि-पुरुषार्थ एवं संकल्प कारण हैं इन्हें अपनाये और शीघ्रता से याद करने का अनुभव प्राप्त करे। इसमें से बहुत से कारण समझने में भी उपयोगी हैं। अर्थात् यहीं कुछ कारण समझने में भी समझने चाहिये। इस स्मृति और समझ से हम अपने जीवन के मुख्य लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। यदि किसी व्यक्ति की स्मृति तीव्र होने के कारण उसने बहुत अच्छी वस्तुएँ स्मरण कर ली पर समझ नहीं है तो वह इतनी ज्यादा उन्नति नहीं कर सकता। पर साथ-साथ समझ भी आ जावे तो चौमुखी उन्नति हो सकती है।

स्मरण किन-किन चीजों को करना चाहिये। अब उसे जनाते हैं। वहीं चीज याद करनी चाहिये जो आपको अपने जीवन में उन्नति की ओर ले जा सकती है। वह चाहे प्राचीन हो या आधुनिक हो। परन्तु यदि कुछ वेद मन्त्र याद हो तो कभी भी आप इन्हें समझकर अपने मुख्य लक्ष्य तक पहुँचने का मार्ग तो जान ही लोगे। और पूर्व की अपेक्षा अब लक्ष्य को शीघ्र प्राप्त कर लोगे।

अन्तिम लक्ष्य तो सभी का एक ही है पर मार्ग सबके भिन्न-भिन्न है कोई मार्ग बहुत लम्बा है। कोई मार्ग बहुत लम्बे से कुछ कम है। और इससे भी छोटे-छोटे मार्ग है। पर जो मार्ग सबसे छोटा है वह कौन सा हो सकता है यह विचार करे तो यह ही समझ में आता कि वेद में कहा गया मार्ग ही सबसे छोटा हो सकता है क्योंकि ईश्वर हमें कभी-भी इधर उधर नहीं भटका सकता और वेद ईश्वर द्वारा प्रदत्त है ज्ञापित है तथा ऋषियों द्वारा प्रमाणित भी। अत: उसी मार्ग में युक्त होना अत्युचित है।

नान्य: पन्था विद्यतेऽयनाय।

-ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

thearyasamaj.org

वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत

वेदभाष्य, वेदभाषाभाष्य, मूलवेद, वेदांगप्रकाश और वैदिक साहित्य

वेद संहिताएँ– (केवल मन्त्र)

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
१.	ऋग्वेद संहिता (मूल) मन्त्र– वर्णानुक्रमणिका सहित सजिल्द (बढ़िया)	रु. ५००.००
२.	"यजुर्वेद संहिता"(मूल) मन्त्र वर्णानुक्रमणिका सहित सजिल्द (बढ़िया)	१८०.००
३.	यजुर्वेद संहिता (मूल) सजिल्द (साधारण)	१००.००
४.	सामवेद संहिता (मूल) मन्त्र वर्णानुक्रमणिका सहित सजिल्द (बढ़िया)	८०.००
५.	अथर्ववेद संहिता (मूल) मन्त्र– वर्णानुक्रमणिका सहित सजिल्द (बढ़िया)	३५०.००
६.	चतुर्वेद विषय सूची	४०.००
७.	सामवेद के मन्त्रों की वर्णानुक्रमणिका	२.००
८.	ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका सजिल्द	१००.००
९.	ऋग्वेद के प्रथम बाईस मन्त्रों का भाष्य	५.००

वेद भाष्य–(संस्कृत एवं हिन्दी, दोनों में भाष्य)

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
१०.	ऋग्वेदभाष्य पहला भाग (सजिल्द)	१५०.००
११.	ऋग्वेदभाष्य दूसरा भाग (सजिल्द)	२००.००
१२.	ऋग्वेदभाष्य तीसरा भाग (सजिल्द)	२००.००
१३.	ऋग्वेदभाष्य चौथा भाग (सजिल्द)	१५०.००
१४.	ऋग्वेदभाष्य पांचवां भाग (सजिल्द)	२५०.००
१५.	ऋग्वेदभाष्य छठा भाग (सजिल्द)	६०.००
१६.	ऋग्वेदभाष्य सातवाँ भाग (सजिल्द)	२००.००
१७.	ऋग्वेदभाष्य आठवाँ भाग (सजिल्द)	२००.००
१८.	ऋग्वेदभाष्य सप्तम मंडल प्रथम भाग सजिल्द	७०.००
१९.	ऋग्वेदभाष्य सप्तम मंडल द्वितीय भाग सजिल्द (पं. आर्यमुनि)	६०.००
२०.	ऋग्वेदभाष्य अष्टम मण्डल पहला भाग सजिल्द	
२१.	ऋग्वेदभाष्य अष्टम मण्डल दूसरा भाग सजिल्द	
२२.	ऋग्वेदभाष्य नवम मण्डल प्रथम भाग सजिल्द (पं. आर्यमुनि)	१५०.००
२३.	ऋग्वेदभाष्य नवम मण्डल द्वितीय भाग सजिल्द	
२४.	ऋग्वेदभाष्य दसवां मण्डल प्रथम भाग सजिल्द (स्वामी ब्रह्ममुनि)	२००.००
२५.	ऋग्वेदभाष्य दसवाँ मण्डल द्वितीय भाग सजिल्द (स्वामी ब्रह्ममुनि)	९०.००
२६.	यजुर्वेदभाष्य पहला भाग (सजिल्द)	२००.००
२७.	यजुर्वेदभाष्य दूसरा भाग (सजिल्द)	३५०.००
२८.	यजुर्वेदभाष्य तीसरा भाग (सजिल्द)	२५०.००
२९.	यजुर्वेदभाष्य चौथा भाग (सजिल्द)	१५०.००

वेद भाषाभाष्य – (केवल हिन्दी भाष्य)

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
३०.	ऋग्वेदभाषाभाष्य का नमूना	५.००
३१.	ऋग्वेदभाषाभाष्य पहला भाग (सजिल्द)	२००.००
३२.	ऋग्वेदभाषाभाष्य दूसरा भाग (सजिल्द)	३५.००
३३.	ऋग्वेदभाषाभाष्य तीसरा भाग (सजिल्द)	३५.००
३४.	ऋग्वेदभाषाभाष्य चौथा भाग (सजिल्द)	२५.००
३५.	ऋग्वेदभाषाभाष्य पांचवां भाग (सजिल्द)	३०.००
३६.	ऋग्वेदभाषाभाष्य छठा भाग (सजिल्द)	३०.००
३७.	ऋग्वेदभाषाभाष्य सातवाँ भाग (सजिल्द)	५०.००
३८.	ऋग्वेदभाषाभाष्य आठवाँ भाग (सजिल्द)	५०.००
३९.	ऋग्वेदभाषाभाष्य (नवाँ भाग) सप्तम मण्डल पहला भाग (सजिल्द)	२५.००

thearyasamaj.org

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
४०.	ऋग्वेदभाषाभाष्य सप्तम मण्डल द्वितीय भाग सजिल्द (पं. आर्यमुनि)	३५.००
४१.	ऋग्वेदभाषाभाष्य अष्टम मण्डल (सजिल्द)	
४२.	ऋग्वेदभाषाभाष्य नवम मण्डल (सजिल्द)	
४३.	ऋग्वेदभाषाभाष्य दसवां मण्डल प्रथम भाग सजिल्द (स्वा. ब्रह्ममुनि)	४५.००
४४.	ऋग्वेदभाषाभाष्य दसवां मण्डल द्वितीय भाग सजिल्द (स्वा. ब्रह्ममुनि)	४५.००
४५.	यजुर्वेदभाषाभाष्य पहला भाग (सजिल्द)	१००.००
४६.	यजुर्वेदभाषाभाष्य दूसरा भाग (सजिल्द)	३७५.००

स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक विद्यामार्तण्ड

४७.	सामवेद अध्यात्मिक मुनिभाष्य (पूर्वार्चिक)	
४८.	सामवेद अध्यात्मिक मुनिभाष्य (उत्तरार्चिक) (दोनो खण्डों का सम्मिलित मूल्य)	४००.००
४९.	अथर्ववेदभाष्य – (काण्ड १ से २०) तीन भाग का एक सेट	

विविध

५०.	गोकरुणानिधि (बढ़िया)	५.००
५१.	स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश	५.००
५२.	स्वीकारपत्र	३.००
५३.	आर्योद्देश्यरत्नमाला (हिन्दी)	५.००

सिद्धान्त ग्रन्थ

५४.	सत्यार्थप्रकाश (सजिल्द बढ़िया)	१२०.००
५५.	आर्याभिविनय (बड़ा आकार सजिल्द)	१०.००
५६.	आर्याभिविनय (बड़ा आकार अजिल्द)	७.००
५७.	आर्याभिविनय (गुटका अजिल्द)	७.००

कर्मकाण्डीय

५८.	वैदिक नित्यकर्मविधि	२५.००
५९.	पञ्चमहायज्ञविधि	१२.००
६०.	विवाह–पद्धति	२०.००
६१.	संस्कारविधि (सजिल्द)	७०.००

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
६२.	हवनमन्त्राः (बड़ा आकार)	५.००

पाखण्ड–खण्डन और शंका–समाधान ग्रन्थ

६३.	अनुभ्रमोच्छेदन	
६४.	भ्रमोच्छेदन (साधारण)	४.००
६५.	भ्रमोच्छेदन (बढ़िया)	१०.००
६६.	भ्रान्तिनिवारण	
६७.	शिक्षापत्रीध्वान्त–निवारण (स्वामीनारायण मतखण्डन)	२.००
६८.	वेदविरुद्धमत–खण्डन	१०.००
६९.	वेदान्तिध्वान्तनिवारण	२.००
७०.	शास्त्रार्थ काशी	८.००
७१.	शास्त्रार्थ हुगली (प्रतिमा–पूजन विचार)	६.००
७२.	सत्यधर्म विचार (मेला चान्दापुर)	७.००
७३.	शास्त्रार्थ जालंधर	३.००
७४.	शास्त्रार्थ अजमेर	३.००
७५.	शास्त्रार्थ बरेली (सत्यासत्य विवेक)	८.००
७६.	शास्त्रार्थ मसूदा	५.००
७७.	शास्त्रार्थ उदयपुर	४.००
७८.	शास्त्रार्थ फिरोजाबाद	१०.००
७९.	महर्षि दयानन्द के शास्त्रार्थ (सजिल्द)	४०.००

शिक्षा व व्याकरण ग्रन्थ (वेदाङ्ग प्रकाश)

८०.	वर्णोच्चारण शिक्षा	१५.००
८१.	सन्धिविषय	
८२.	नामिक	
८३.	कारकीय	१०.००
८४.	सामासिक	
८५.	स्त्रैणताद्धित	
८६.	अव्ययार्थ	५.००
८७.	आख्यातिक (अजिल्द)	१५०.००

शेष भाग अगले अंक में.......

ऊमर काव्य

- ऊमरदान लालस

राजस्थान के गौरव राजस्थानी भाषा के कवि उमरदान जी का अमर काव्य हमें परोपकारिणी सभा के सम्माननीय सदस्य डॉ. खेतलखानी जी की कृपा से प्राप्त हुआ। इस पुस्तक का तीसरा संस्करण १९३० में प्रकाशित हुआ था। इसमें उमरदान जी की अनेक रचनाओं का संग्रह है। इस पुस्तक के पृष्ठ संख्या ६० से ९४ तक 'दयानन्द री दया' नाम से उनकी रचना प्रकाशित है। कवि और काव्य दोनों ही महत्त्वपूर्ण होने से पाठकों के लाभार्थ दयानन्द दर्शन को प्रकाशित कर रहे हैं। यह एक इतिहास का भाग है। पाठक लाभ उठा सकेंगे। - **सम्पादक**

पिछले अंक का शेष......

[illegible] खाड चिड़ी पट जोड़ी,
मोत हुवे सो जाय मकोड़ी[१] ॥३४॥
[illegible][२] पाव कबीर बणाई,
चोखी ईंटां पकी चणाई।
[illegible] मिल ना रखी मणाई,[३]
घुस खर गिंडक पियो घणांई ॥३५॥
पावर[४] ठंडो जांभ[५] पायो,
स्वाद अनोखो घणों सरायो।
[illegible] करी निज ताल दिखायो,
गया पाडिया जल गिदलायो[६] ॥३६॥

१—मकड़ी, कीट विशेष। २—बावड़ी। ३—कमी। ४—वर्षा का पानी। ५—इनका जन्म सं० १५०८ भादों वदी ८ शुक्रवार (तारीख २०-८-१४५१ ई०) को बीकानेर राज्य के गाँव पीपासर में परमार राजपूत कुल में हुआ था। इनके पिता का नाम लोटू था। सं० १५४२ में पशु चराना छोड़ यह जनता को उपदेश देने लगे; और जाट, माली, गूजर आदि कृषक जातियों को अपने २९ उपदेश ग्रहण करा उनकी स्वतंत्र नई जाति "बिसनोई" नाम से प्रसिद्ध कर दी। बिसनोई मादक वस्तुओं (तमाखू आदि) को छूना महा पाप समझते हैं, और इनमें से यदि कोई स्त्री पुरुष मुसलमान आदि हो जाता है तो उसे जांभाजी का पाहल (चरणामृत) पिला कर यज्ञ से शुद्ध कर लेते हैं और फिर उसके साथ कोई परहेज नहीं रखते। जांभाजी का स्वर्गवास मगसिर बदी ८ सं० १५८३ रविवार (ता० २८-१०-१५२६ ई०) को हुआ। ६—गन्दा किया।

thearyasamaj.org

दीन लोक ठहरया कछु देरी,
घर हित घणी आनंद री घेरी।
फिरगो रतनागर[1] चहुँ फेरी,
विचरी वासा मीठी वेरी ॥३७॥
नानग सरवर भरियो नीको,
झुके लोग पीवण दे झीको।
ठगबाजी गादी रो ठीको,
फेर सिकां[2] कर दीनों फीको ॥३८॥
हरीदास रो नासज हूणों,
दादू[3] रो मारां सूं दूणों।

१—(रत्नाकर) समुद्र। २—सिक्ख लोग। ३—ये जयपुर राज्य के गांव नराणे के पिंजारे थे। इनका जन्म सं० १६०१ वि० फागुण सुदि ८ (गुरुवार १६-२-१५४५ ई०) को और देहान्त सं० १६६० ज्येष्ठ सुदि ८ रविवार (ता० ८ मई १६०३ ई०) को हुआ था। ये मूर्ति पूजा, मन्दिर और मसजिद का विरोध करते थे। इनके पंथ के साधु दादूपंथी कहलाते हैं, जो घरबारी और नहंग दोनों हैं। नहंग दादूपंथियों की पहले जयपुर राज्य में बड़ी सेना थी जो कई युद्धों में अच्छी लड़ी थी। (देखो फारसी किताब "दबिस्तानुल मजाहिब" और "मारवाड़ मर्दुमशुमारी रिपोर्ट" सन् १८६१ ई० पृ० २६०)

thearyasamaj.org

सन्तदास[1] रो हुयगो सूंनों,
आंतो पाणी पायो ऊंनों[2] ॥३९॥
रामचरण[3] पो[4] ऊपर रहियो,
सीत घांम[5] अपणें सिर सहियो।
कंठ सुं पांणी पांणी कहियो,
विललां भांग पिलायर[6] वहियो॥४०॥
आछ रामदे पीवण अटकी,
दूभां नाभे[7] घाली भटकी।

१—ये रामस्नेही साधु छोटा नारायणदास के शिष्य थे। इनकी गादी मेवाड़ राज्य के गांव दांतड़ा में है। इनका स्वर्गवास सं० १८०६ वि० में हुआ। २—गर्म। ३—इनका जन्म जयपुर में बीजावर्गी वैश्य कुल में सं० १७७६ भादों सुदि १४ सोमवार (ता० १७-८-१७१९ ई०) को हुआ। सं० १८०८ वि० में ये साधु संतदास के शिष्य कृपाराम के चेले होकर शाहपुरा (मेवाड़) में जा बैठे। सं० १८५५ वैशाख में यह रामशरण हुए। इसके भेष के साधु "शाहपुरे के रामस्नेही" कहलाते हैं। ४—प्याऊ। ५—धूप। ६—पिलाकर। ७—ये जाति के डोम (डूम-ढोली) थे और सं० १५४० में जन्मे थे। ये पहले अन्धे हो गये थे। अतः जयपुर की गलता गादी के महन्त अग्रदास ने इन्हें किसी गांव या जंगल से ६-७ वर्ष की आयु में जयपुर में ले आये। इलाज होने पर इनके नेत्र ठीक होगये। ये भक्त और कवि थे। इनका लिखा ग्रन्थ "भक्तमाल" है जिसमें भक्तों की विचित्र कथा है।

thearyasamaj.org

मीरां[1] फोड़ गई जल मटकी,
पापी ओड़ बोबदे पटकी ॥४१॥

१—यह देवी मेड़ता के स्वतन्त्र नरेश राव दूदाजी राठोड़ की पौत्री और रतनसिंह की इकलौती पुत्री थी। ये सं० १४६८ वि० में कुड़की गाँव में जन्मी थी और सं० १५१६ में मेवाड़ के प्रतापी महाराणा साँगा के ज्येष्ठ पुत्र भोजराज को ब्याही गई थी। परन्तु सं० १५१८ व १५२३ के बीच किसी समय विधवा होगई। विद्वानों ने इसकी मृत्यु सं० १६०३ वि० में होना माना है परन्तु सं० १६०३ के बाद भी इसके जीवित रहने का पता लगता है। इस भक्तशिरोमणि देवी के बनाये हुए ईश्वर भक्ति के सैकड़ों भजन भारतवर्ष भर में प्रसिद्ध हैं। मीराँबाई के गुरु सुप्रसिद्ध महात्मा रैदासजी थे जैसा कि मीराँ के भजनों से भी स्पष्ट है। "गुरु मिलियां रैदास जी, दीन्ही ज्ञान की गुटकी" और कहा है "मीरां ने गोविन्द मिल्या जी, गुरू मिलिया रैदास"। तपस्वी रैदास जी महाराज जाति के चमार थे। मीरां के विद्यागुरु गुर्जर गौड़ ब्राह्मण व्यास गजाधर, कांटिया तिवारी गोत्र का था इसके वंशजों के पास १ हजार बीघा पीवल जमीन, ५०००) वार्षिक आय की मेवाड़ के कस्बापुर और मांडल में मय दानपत्र के है। गजाधर के वंशधरों के करीब ४० घर, ठिकाणा रूपाहेली और बदनोर में भी हैं। साधु सन्तों की एक पुरानी साखी है:—

हुवो धने सुं दादू वधता, दादू सूं करमां दुरस।
करमां सिरे कबीर नामदे, सारांसूं मीरां सरस॥

शेष भाग अगले अंक में......

thearyasamaj.org

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रातः एवं सायं दैनिक यज्ञ- प्रवचन, वेद-पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***- आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति निःशुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***- अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था निःशुल्क की जाती है। ***गोशाला***- गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का निःशुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***- वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा निःशुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***- इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ निःशुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***- योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में निःशुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी-छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अत: आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

thearyasamaj.org

अतिथि यज्ञ के होता

(१६ से ३१ मार्च २०१५ तक)

१. श्री भास्कर सेन गुप्ता, बेंगलूर, कर्नाटक २. स्वस्तिकाम: चैरिटेबल ट्रस्ट, अमरावती, महा. ३. सुश्री यशोदारानी सक्सेना, कोटा, राज. ४. श्री एस.एस. गोयल, लुधियाना, पंजाब ५. श्रीमती विमला देवी बीड़, महाराष्ट्र ६. श्री रंजन हांडा, नई दिल्ली ७. श्री अनिल कुमार सिंघल, नई दिल्ली ८. श्री कैलाश गर्ग, जयपुर, राज. ९. श्री सूर्यप्रकाश आर्य, अलवर, राज. १०. श्री पुष्पमुनि, हरिद्वार, उत्तराखण्ड ११. श्री विक्रम आंजना, निम्बाहेडा, राज. १२. श्री अमृत सिंह आर्य, रेवाड़ी, हरियाणा १३. स्वामी देवेन्द्रानन्द, अजमेर १४. श्रीमती मेहता माता, अजमेर १५. श्री ओमप्रकाश, सवाईमाधोपुर, राज. १६. श्री नरेन्द्र कुमार सुभाष, सूरतगढ़, राज. १७. श्री जयदेव अरोड़ा, गुड़गाँव, हरियाणा १८. श्री सत्यव्रत पंकज गर्ग, कोलकाता, पं. बंगाल १९. श्री न्यायाधीश प्रीतमपाल लोकायुक्त, चण्डीगढ़, हरियाणा २०. सुश्री सुमन अमित महेश्वरी, मुम्बई, महाराष्ट्र २१. श्री राजेन्द्र मोहन, नई दिल्ली २२. श्री रामेश्वरनाथ गुप्ता, न्यूजर्सी, यू.एस.ए. २३. श्री रमेश व श्रीमती उषा बंसल, अजमेर २४. श्रीमती पुष्पलता उपाध्याय, अजमेर २५. डॉ. विमला देवी सुग्रीव काले, बीड़, महाराष्ट्र २६. श्रीमती सविता गुप्ता, मुम्बई, महाराष्ट्र २७. श्री नरेन्द्र आर्य व श्रीमती रंजना आर्या, बेंगलूर, कर्नाटक २८. श्री अमरचन्द महेश्वरी, अजमेर २९. श्री देवमुनि, अजमेर ३०. श्रीमती उर्मिला उपाध्याय, अजमेर ३१. श्री प्रभु कुमावत, अजमेर ३२. श्रीमती तीजा देवी, पाली, राज. ३३. माता कौशल्या, अजमेर ३४. श्री नारायण सोनी, नोखा, राज. ३५. श्री जगदीश प्रसाद सोनी, नोखा, राज. ३६. श्रीमती मधुबाला रामचरन, देवली, राज. ३७. श्री सूर्यवंश चौधरी, सहारनपुर, उ.प्र. ३८. श्रीमती इन्दु भूतानी, फरीदाबाद, हरियाणा ३९. श्री प्रभाकर आर्य, नोएडा, दिल्ली ४०. श्रीमती सरोज शर्मा, अजमेर ४१. श्री रामचन्द्र, अजमेर ४२. आर्य समाज तिजारा, अलवर, राज. ४३. श्री मुकेश गर्ग, चेन्नई, तमिलनाडू ४४. श्री अरुण टण्डन, यू.एस.ए.।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों में नि:शुल्क किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौवों को उत्तम चारा मिले इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चेक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएँगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

(१६ से ३१ मार्च २०१५ तक)

१. श्री कमल किशोर भार्गव, जैसलमेर, राज. २. श्री पंकज दीवान, नई दिल्ली ३. कै. चन्द्रप्रकाश कमलेश त्यागी, हरिद्वार, उत्तराखण्ड ४. श्री एस.एस. गोयल, लुधियाना, पंजाब ५. श्रीमती पूर्वा रवि मून्दड़ा, बेंगलूर, कर्नाटक ६. श्री अजय वर्मा, अमरावती, महाराष्ट्र ७. राजपूताना म्यूजिक हाउस, अजमेर ८. श्रीमती सरोज सुमन, दिल्ली ९. श्री राजेश अग्रवाल, अजमेर १०. श्रीमती मेहता माता, अजमेर ११. श्रीमती सन्तोष अरोड़ा, अजमेर १२. श्रीमती कमला अरोड़ा, अजमेर १३. श्री सत्यनारायण गोपाल नारायण अरोड़ा, अजमेर १४. श्रीमती प्रेमलता, अजमेर १५. श्री नवीन, झज्जर, हरियाणा १६. श्री कैलाशचन्द, अजमेर १७. सुश्री नन्दिनी निरंजन, अजमेर १८. श्री महेश गुप्ता, गुडगाँव, हरि. १९. श्री जयदेव अरोड़ा, गुडगाँव, हरि. २०. श्री सुमेरसिंह शास्त्री, पलवल, हरि. २१. श्रीमती प्रेमवती शर्मा, जयपुर, राज. २२. श्री अरुण टण्डन, यू.एस.ए. २३. श्री भूराराम आर्य, २४. श्री श्रवणसिंह आर्य, खिवताना २५. श्रीमती तारा, कोलकाता, पं. बंगाल २६. श्री जयनारायण कालानी, पाली, राज. २७. श्री अमरचन्द महेश्वरी, अजमेर २८. श्रीमती उर्मिला उपाध्याय, अजमेर २९. श्रीमती वेदवती शर्मा, उदयपुर, राज. ३०. श्रीमती शान्ति ओसादकर, अजमेर ३१. श्री चमनप्रकाश, अजमेर ३२. आर्य ब्रदर्स, अजमेर ३३. श्री रमेश मुनि, अजमेर ३४. श्री अवनीश कुमार बंसल, नई दिल्ली ३५. श्री विक्रम आर्य, हिसार, हरियाणा ३६. श्रीमती सरोज शर्मा, अजमेर ३७. श्रीमती रेणू रॉय, अजमेर ३८. श्री धूलचन्द भूतड़ा, ब्यावर, राज. ३९. श्री लक्ष्मीचन्द, अजमेर ४०. श्री कैलाश शर्मा, अजमेर ४१. श्री महेन्द्र गार्गीय, जयपुर, राज.।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

thearyasamaj.org

स्तुता मया वरदा वेदमाता-८

इस मन्त्र में शब्द है अनुव्रती, अर्थ होगा व्रतों का अनुकरण करने वाला समान व्रतवाला। ऋषि दयानन्द इसका अर्थ करते हैं- अनुकूल चलने वाला। वेद के शब्द व्यापक अर्थ रखते हैं। जब कभी हमें मन्त्र के शब्दार्थ में सन्देह होता है, उसका एक कारण यह होता है कि हम कोष से जिस अर्थ को जानते हैं, मन्त्र में उसी अर्थ की कल्पना करते हैं। कभी-कभी लगता है, यह असंगत है अथवा सामान्य है, विपरीत है। जब किसी शास्त्र विशेष का अध्ययन किया जाता है, तब उसको समझने के लिए शास्त्र के प्रारम्भ में उन शब्दों का अपेक्षित अर्थ बताया जाता है। ऐसे शब्दों को परिभाषित किया जाता है, इनको शास्त्रगत परिभाषा कहा जाता है।

आजकल जैसे विधिशास्त्र है, विज्ञान है, दर्शन है, साहित्य है, इन सब शास्त्रों में प्रयुक्त होने वाले शब्दों को परिभाषित कर दिया जाता है। इनके अर्थ के अनुसार ही शास्त्र की व्याख्या की जाती है, परन्तु वेदार्थ करते समय इस बात को हम सर्वथा भूल जाते हैं और जिन शब्दों का जो अर्थ हम जानते हैं, जो प्रचलित हैं अथवा आजकल के कोषग्रन्थों में उपलब्ध हैं, उन्हीं अर्थों से हम मन्त्रों को समझने का यत्न करते हैं। हमारा यह प्रयास हमें प्रसन्नता नहीं दे पाता।

जब हम आजकल सभी विषयों के जानने वालों के लिए भी सामान्य ज्ञान की पृथक् से आवश्यकता समझते हैं, फिर वेद और वैदिक साहित्य जैसे व्यापक और दुरूह विषय में वैदिक साहित्य की सामान्य जानकारी के बिना किये गये अर्थों को प्रामाणिक मानते हैं और उन अर्थों के प्रति आग्रह भी रखते हैं, इससे हम वेदार्थ से दूर चले जाते हैं।

जिसने कोई भी ग्रन्थ लिखा, उसके लिखने का प्रयोजन अवश्य होगा। बिना प्रयोजन के कोई मनुष्य किसी कार्य में प्रवृत्त नहीं होता, फिर वेद की रचना निष्प्रयोजन कैसे हो सकती है और कोई प्रयोजन है तो वेद के अध्येता को उसका पता अवश्य होना चाहिए। पता होने के साथ-साथ वेद के अध्ययन करने वाले को उस प्रयोजन की प्राप्ति होनी चाहिए। उसे वेदाध्ययन का फल मिलना चाहिए। वेद मनुष्य का मार्गदर्शक है, जीवन को सफल सार्थक बनाने का उपाय बताता है, उसी उपाय को शास्त्रकारों ने धर्म कहा है और वेद को '**वेदोऽखिलो धर्ममूलम्**' वेद समस्त धर्म का मूल है, यह माना है- अर्थात् वेद द्वारा बताया गया मार्ग मनुष्य के कल्याण और सुख का आधार है। वेद किसी एक समय और एक वर्ग या व्यक्ति के लिए नहीं लिखे गये हैं। इनमें मनुष्यों के सामने आनेवाली स्वाभाविक समस्याओं के शाश्वत समाधान प्रस्तुत किये गये हैं।

यह सूक्त पारिवारिक समस्याओं के समाधान का सूक्त है। इस दूसरे मन्त्र में अनुव्रत शब्द द्वारा हमारी घर की स्वाभाविक रूप से आती रहने वाली समस्याओं का समाधान प्रस्तुत किया गया है। घर में एक साथ सभी आयु के, सभी योग्यता के, स्त्री-पुरुष, बालक-बालिकायें रहते हैं। आयु में अन्तर होता है, योग्यताओं का अन्तर होता है, अनुभव, आवश्यकतायें भी एक दूसरे से अलग होती हैं। ऐसी परिस्थिति में आवश्यकतायें सबकी पूरी होनी चाहिए, सबकी इच्छाओं का सम्मान किया जाना चाहिए। इसमें हमारे साधनों की न्यूनता या अधिकता, ज्ञान भी कम अधिक होना अनिवार्य है, ऐसी परिस्थिति में घर में सब विषमताओं के होने पर सामञ्जस्य कैसे बना रह सकता है, यह मूलभाव है जिसका समाधान इन मन्त्रों में सुझाया गया है।

मन्त्र के शब्द इन समस्याओं के समाधान की ओर इंगित करते हैं। प्रथम शब्द था **अणुव्रतः** अर्थात् जहाँ कहीं सामञ्जस्य की अपेक्षा है, वहाँ अनुव्रती होना आवश्यक है। व्रत का अभिप्राय नियम है, व्यवस्था है। जहाँ कहीं एक से अधिक लोग रहते हैं, वहाँ नियम की, व्यवस्था की आवश्यकता पड़ती है, तभी हम एक दूसरे के अनुकूल रह सकते हैं। नियम का, परम्परा का, व्यवस्था का पालन करने से, ध्यान रखने से मनुष्य के जीवन में परस्पर अनुकूलता आती है। सम्भवतः इसी कारण एक मन्त्र की संगति ब्रह्मचर्याश्रम में भी और गृहस्थ आश्रम में भी है। मन्त्र में केवल शब्द का अन्तर है, ब्रह्मचर्याश्रम में बृहस्पतिष्ट्वा कहा गया है और गृहस्थाश्रम में प्रजापतिष्ट्वा कहा गया है। अन्य मन्त्र समान है।

इस मन्त्र में पुत्र को पिता का अनुव्रती बनने के लिए कहा है, यह एक संकेत है। परिवार या समाज में जो भी बड़े हैं या जो छोटे हैं, उनमें अनुकूलता होनी चाहिए।

thearyasamaj.org

अनुकूलता न होना स्वाभाविक है, इसलिये अनुकूल बनने की बात कही गई है। मनुष्य की प्रवृत्ति भौतिकता की ओर होती है। मनुष्य का मन भौतिक है, बुद्धि भौतिक है, इन्द्रियाँ भौतिक हैं, शरीर भी भौतिक है, इसलिए इन सबकी प्रकृति भौतिकता की ओर होनी ही है, परन्तु इनके अन्दर जो प्रवृत्ति का मूल है, इच्छा है, सुख-दु:ख की अनुभूति का आधार है, वह आत्मा है। आत्मा चेतन है, ये साधन जड़ हैं, आत्मा से इनमें चैतन्य तो आ जाता है, परन्तु प्रवृत्ति मूल की ओर होने से इनकी गति भौतिकता की ओर होती है। ये साधन हैं, अत: स्वतन्त्र नहीं हैं, अधिकारी नहीं है, अत: आत्मा चाहता है तो इन्हें अपने अनुकूल बना सकता है और ज्ञान होने पर बनाता है। जन्म के साथ सांसारिकता की ओर प्रवृत्त होना सहज है। जब तक हम नियन्त्रित नहीं करेंगे, तब तक इनकी आत्मा प्रवृत्त नहीं हो सकती, अत: मन्त्र में आत्मानुकूल बनने के लिए अनुव्रती बनने की बात की है। आजकल इस प्रतिकूलता को हम पीढ़ी का अन्तराल कहते हैं। पीढ़ी का अन्तराल तो होना ही है, इस अन्तराल को, प्रतिकूलता से हटा कर अनुकूलता की ओर लाने के प्रयास का नाम ही अनुव्रती होना है।

क्रमश: ....

पुस्तक परिचय

पुस्तक का नाम - वैदिक भक्ति भजनावलि
संकलन कर्त्ता एवं सम्पादक - पं. विश्वेन्द्रार्य:
प्रकाशक - वैदिक ज्ञान-विज्ञान संस्थान, आगरा-५
मूल्य - २५/- **पृष्ठ संख्या** - ९६

जीवन में काव्य का विशिष्ट स्थान है। काव्य मय भाषा में माधुर्य और गेय शक्ति आ जाती है। श्रोता एवं पाठकों को काव्य के भाव, भाव-विभोर कर देते हैं। श्रोता व गायक भी मन्त्रमुग्ध हो जाते हैं। यह मस्ती अलौकिक होती है। ईश्वर के प्रति लिखे गये गीत, भजन आदि के बोल हमें प्रेरित करते हैं। हम उन्हें दैनिक जीवन में समय-समय पर गुनगुनाते रहें। भजनों को बोलने से मस्ती एवं आनन्द की प्राप्ति होती है।

वैदिक भक्ति भजनावलि में भक्त अमीचन्द मेहता, पं. सत्यपाल (पथिक), पं. नन्दलाल आर्य, पं. प्रकाशचन्द्र कविरत्न, कविवर नाथूराम शंकर, आचार्य चन्द्रदेव, महाशय किशनलाल आर्य आदि के भजन संकलित हैं।

आज के युग में फिल्मी गीतों में कोई सार नहीं, फिर भी युवा पीढ़ी भ्रमित हो रही है। ऐसे में विभिन्न आयुवर्ग के लोगों को ईश भक्ति के लिए प्रेरित करने वाली इस सम्पादित कृति के सभी गीत श्रेष्ठ हैं। पुस्तक उत्सवों पर बाँटी जाय तो उत्तम है। संकलन कर्त्ता को साधुवाद।

- देवमुनि, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

तर्क के बिना कोई भी विद्या किसी मनुष्य को नहीं होती और विद्या के बिना पदार्थों से उपयोग भी कोई नहीं ले सकता।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५६

यज्ञ आदि व्यवहारों के बिना गृहाश्रम में सुख नहीं होता। -महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५९

thearyasamaj.org

संस्था - समाचार

१६ से २८ फरवरी २०१५

'ईशा वास्यमिदं सर्वम्' का जब स्मरण होता है, तब सभी संस्थाएँ गौण हो जाती हैं, सभी समाचार मौन हो जाते हैं। परमात्मा इस विश्व में सर्वत्र व्याप्त है, इससे बड़ी 'संस्था' और क्या होगी? 'परमात्मा सर्वत्र है' इससे बड़ा 'समाचार' और क्या होगा? हमेशा की तरह यह पखवाड़ा भी ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना में व्यतीत हुआ। विशेष आहुतियाँ दी गईं, स्वाध्याय एवं प्रवचन हुए, गुरुकुल की कक्षाएँ चलीं, अतिथियों एवं आश्रमवासियों के लिए भोजन-आवास आदि की सुचारु व्यवस्था रही, गोशाला-चिकित्सालय-पुस्तकालय आदि के काम सहज एवं सार्थक रीति से चले एवं 'परोपकारी' पत्रिका का निर्धारित तिथि पर प्रकाशन हुआ। नवसम्वत्सर का सभी ने हर्षोल्लास के साथ स्वागत किया। वसन्तागमन के अवसर पर उद्यान के पेड़-पौधे भी पीछे नहीं रहे। उन्होंने भी जीर्ण-शीर्ण वस्त्र उतारकर नए परिधान पहन लिये। पत्ते-पत्ते पर जैसे प्रसन्नता लिखी हुई दिखाई देती है। देखिये:-

पत्ते-पत्ते पर लिखा जीवन का उल्लास।
शायद ऋषि उद्यान में आया है मधुमास।।

प्रातःकालीन स्वाध्याय: वाचन, व्याख्या और व्याख्यान- मनु के पुत्र मानव ने अपने मूल उत्स को कभी भुलाया नहीं। उसे उसने हमेशा अपनी स्मृतियों में सँजोए रखा। 'मनुस्मृति' इसका प्रमाण है। यह ग्रन्थ नहीं, मानव जाति की संस्कृति एवं अस्मिता का जीवन्त संविधान है। डॉ. सुरेन्द्रकुमार ने ठीक कहा है- 'मनुस्मृति में एक ओर मानव और मानव समाज के लिए सांसारिक श्रेष्ठ कर्त्तव्यों का विधान है, तो साथ ही मानव को मुक्ति प्राप्त कराने वाले आध्यात्मिक उपदेशों का निरूपण भी है।' उन्होंने प्रक्षेपानुसन्धान करके इस ग्रन्थ को नया रूप प्रदान किया है, अत: वे बधाई के पात्र हैं।

ऋषि उद्यान के प्रातःकालीन एवं सायंकालीन यज्ञों को और अधिक प्रभावपूर्ण एवं चिन्तनशील बनाने के लिए उन्हें स्वाध्याय, प्रवचन एवं व्याख्यान जैसे ज्ञानयज्ञों से संयुक्त किया गया है। इस समय प्रातःकाल **आचार्य सोमदेव जी** महर्षि मनु विरचित 'मनुस्मृति' के द्वितीय अध्याय में उल्लिखित 'ब्रह्मचारियों के कर्त्तव्य' प्रकरण का स्वाध्याय करा रहे हैं। यहाँ गुरु-शिष्य के सम्बन्धों की चर्चा करके उनके आचरणों की व्याख्या प्रस्तुत की गई। आचार्य जी ने बताया कि अभिवादन शीलता केवल सामाजिक व्यवस्था ही नहीं है, यह व्यक्ति के सम्पूर्ण अस्तित्व को परिष्कृत करने वाली आध्यात्मिक पद्धति है। प्रणाम करने से श्वास का सन्तुलन तो होता ही है, हमारी आयु, विद्या, कीर्ति एवं शक्ति का भी संवर्धन होता है। मनु के इस श्लोक को वैश्विक प्रसिद्धि एवं मान्यता मिली है:

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविन:।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्यायशो बलम्।।९६।।

आचार्य सोमदेव जी ने बताया कि 'सत्यार्थप्रकाश' एवं 'संस्कार विधि' में भी महर्षि दयानन्द जी ने इस श्लोक का कई जगह प्रयोग किया है। मनुष्य का सामान्य स्वभाव यह है कि वह अपने से छोटे या अपने बराबर के व्यक्तियों के बीच रहना पसन्द करता है, ताकि अहंकार की तुष्टि के साथ उसके अस्तित्व को पुष्टि मिलती रहे, पर ऋषि कहते हैं कि अपने से बड़े एवं गरिमामय व्यक्ति के साथ रहने, उनका अभिवादन करने तथा आज्ञा पालन में तत्परता दिखाने से व्यक्तित्व में अनोखा निखार आता है, जो छोटों या बराबरी वालों के साथ रहने पर नहीं आता।

अभिवादन की विधि यह है कि अभिवादन सूचक शब्द के बाद व्यक्ति को स्वयं का परिचय देना चाहिए। जो अभिवादन का उत्तर न दे, उसका अभिवादन न करने की सलाह भी मनु देते हैं। वे कहते हैं-

यो न वेत्त्यभिवादस्य विप्र: प्रत्यभिवादनम्।
नाभिवाद्य: स विदुषा यथा शूद्रस्तथैव स:।।१०१।।

- जो द्विज अभिवादन करने के उत्तर में अभिवादन करना नहीं जानता, बुद्धिमान् आदमी को उसे अभिवादन नहीं करना चाहिए, क्योंकि वह शूद्र के समान है।

आचार्य जी ने बताया कि वर्ण अनुसार प्रश्न करना चाहिए। दीक्षित एवं बड़े व्यक्ति का नाम सीधे नहीं बोलना चाहिए, बल्कि नाम के पूर्व आदर सूचक शब्द लगाकर उन्हें सम्बोधित करना चाहिए और **'भो, भवान्, भवति, भगिनी'** आदि का प्रयोग करना चाहिए। सम्मान का आधार भी मनु महाराज ने निश्चित किया है। वे कहते हैं-

वित्तं बन्धुर्वय: कर्म विद्या भवति पञ्चमी।
एतानि मान्यस्थानानि गरीयो यद्यदुत्तरम्।।१११।।

- अर्थात् धन, बन्धु, आयु, उत्तम कर्म एवं श्रेष्ठ विद्या- ये सम्मान के लिए सर्वमान्य स्थान हैं। ये भी उत्तरोत्तर

thearyasamaj.org

अधिक मान्य हैं। ९० वर्ष से अधिक आयु का शूद्र भी सबके द्वारा सम्मान प्राप्त करने योग्य है। इसी तरह राजा एवं स्नातक में स्नातक ही अधिक सम्मान योग्य है।

आचार्य जी ने आचार्य तथा उपाध्याय के लक्षण बताए, पिता एवं गुरु की परिभाषाएँ दीं तथा ऋत्विक्, पुरोहित, यजमान आदि के अन्तर को स्पष्ट किया। विद्वत्ता के आधार पर बालक और पिता की परिभाषा देते हुए मनु कहते हैं- **'अज्ञो भवति वै बालः पिता भवति मन्त्रदः।'** आयु में बड़ा होने पर भी जो विद्या-विज्ञान से रहित है, वह बालक ही है और जो विद्या-विज्ञान का दाता है, वह बालक होकर भी वृद्ध है, पूजनीय है। बिना पढ़ा-लिखा विप्र काठ के हाथी और चमड़े के मृग जैसा है। गुरु-शिष्य का कर्त्तव्य है कि वे वैर बुद्धि छोड़कर ज्ञान देने और पाने का कल्याणकारी मार्ग अपनाएँ। जिसकी वाणी पवित्र है, जिसका मन शुद्ध है, वही वेदों के सिद्धान्तरूप फल को प्राप्त करता है। द्विज के लिए वेदाभ्यास अनिवार्य है। यही उसके लिए परम तप है।

महर्षि मनु ने गुरुकुल में विद्याभ्यास करने वाले ब्रह्मचारी-ब्रह्मचारिणियों के लिए कई नियमों का विधान किया है। उन्हें देव, ऋषि एवं पितरों को तृप्त करने, मदिरा, मांस, गन्ध, माला, रस, खटाई आदि का त्याग करने, जूता, छाता आदि वस्तुओं का उपयोग न करने तथा नृत्य, गीत और वादन से दूर रहने का निर्देश किया है। ब्रह्मचारी स्त्रियों से एवं ब्रह्मचारिणी पुरुषों से सम्पर्क न रखें।

२८ मार्च को रामनवमी के पावन पर्व पर आचार्य सोमदेव जी ने विशेष प्रवचन देते हुए महापुरुष राम के महत्तम चारित्रिक गुणों की चर्चा की। वाल्मीकि के राम हमारे आदर्श हैं जो समन्वय, सौजन्य, शालीनता और शूरवीरता के आधार पर विश्ववन्द्य बने हुए हैं। वे सम अवस्था में ऋषि तुल्य हैं और विषम अवस्था में साधारण मनुष्य जैसे हैं। **'रामो द्विर्न भाषते'** -उनके व्यक्तित्व का निचोड़ है। वे पूजनीय से अधिक अनुकरणीय हैं।

डॉ. धर्मवीर जी जब भी ऋषि उद्यान में होते हैं, प्रातःकालीन स्वाध्याय के प्रवचन-सत्र से अवश्य जुड़े रहते हैं। ब्रह्मचारी, वानप्रस्थी, संन्यासी एवं अन्य धर्मप्रेमी महानुभाव उनके प्रवचनों को बड़ी तन्मयता और आत्मीयता से सुनते हैं। यात्राओं के अनुभव सुनाने का आग्रह तो जैसे प्रत्येक श्रोता उनसे करता ही है, समकालीन घटनाचक्रों और समस्याओं से जुड़ने और जूझने की शक्ति भी प्राप्त करता है। उनके प्रवचन में किसी महाविद्यालयीन व्याख्यान जैसी सुवास आती है। उस समय यज्ञ मन्दिर में बैठा प्रत्येक व्यक्ति स्वयं को विद्यार्थी जैसा अनुभव करता है।

पिछले दिनों डॉ. धर्मवीर जी गुड़गाँव, गुरुकुल कांगड़ी, कोलकाता, लाड़वा, कुरुक्षेत्र आदि स्थानों पर विभिन्न अधिवेशनों, उद्घाटनों, वेदगोष्ठियों आदि से जुड़े रहे। पिछले ३६ वर्षों से जो यज्ञ समिति यज्ञों का आयोजन करती आ रही है, उसकी अस्मिता को प्रणाम करते हुए उन्होंने वेद यज्ञों को और अधिक सघनता तथा समर्पण भाव से करने की सलाह दी। वेद सबके हैं और वे सबके जैसे होने चाहिए। वेद और यज्ञ को महर्षि ने ऊँचे पद से सामान्य जन तक पहुँचाया है। उनका ऋषित्व इसी में है कि जो चीज सबकी है, उसका साथ सबको मिलना चाहिए। दयानन्द जी ने कहा है कि तुम कैसे भी लड़ो, पर लड़ाई जीतनी चाहिए। विजय ही धर्म है, पराजय ही पाप है। यदि व्याकरण पढ़कर वेदार्थ में प्रवृत्ति न हो तो व्याकरण पढ़ना व्यर्थ है। धर्मवीर जी ने बताया कि सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए किये गए कामों का भी अपना औचित्य है। हमें साधनों का रोना न रोकर साध्य की चिन्ता करनी चाहिए। इसके बिना समाज में पकड़ नहीं होती है। चारों वेदों के पारायण की परम्परा हमें डालनी चाहिए।

यात्रा से लौटने के दूसरे दिन अपने प्रवचन में डॉ. धर्मवीर जी ने कहा- ऋषि दयानन्द के जीवन में कई आश्चर्यजनक प्रसंगों का समाहार हुआ है। मुझे कोलकाता यात्रा के मध्य एक विशेष घटना की जानकारी मिली। ऋषि दयानन्द जी के सिद्धान्तों और मान्यताओं को लेकर कोलकाता (तब का कलकत्ता) बहुत आक्रोश में था। २२ जनवरी सन् १८८१ रविवार को वहाँ की आर्य सन्मार्ग सन्दर्शिनी सभा का एक अधिवेशन कोलकाता विश्वविद्यालय के सीनेट हॉल में भारत के ३०० विद्वानों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ, जिसमें स्वामी दयानन्द के मन्तव्यों को सर्व सम्मति से अस्वीकार किया गया। आश्चर्य और महत्त्व की बात उसमें यह हुई कि सभा में पूर्व पक्षी के रूप में स्वामी जी या उनका कोई प्रतिनिधि उपस्थित नहीं था, क्योंकि वे निमन्त्रित नहीं किये गए थे और न ही उनसे किये जाने वाले प्रश्नों के उत्तर माँगे गए थे। निर्णय एक पक्षीय ही दिया गया और दयानन्द की मान्यताओं को अस्वीकार करके पाँच उत्तर मंजूर किये गए। पं. महेशचन्द्र न्यायतीर्थ, पं. सुब्रह्मण्यम शास्त्री आदि ने इस कुचक्र को सफल बनाने में पूरी शक्ति लगाई।

काशी शास्त्रार्थ के विषय में भी डॉ. धर्मवीर जी ने

thearyasamaj.org

विस्तार से चर्चा की और मूर्तिपूजा, पुराण-मान्यता आदि के विषय में महर्षि के विचारों से अवगत कराया। मूर्तिपूजा के गढ़ काशी को जीतने के बाद तो ऋषि के प्रभाव का विस्तार पूरे देश को छूने लगा। पादरी लूकस के प्रसंग की भी चर्चा की। सन् १८७७ में जब फर्रुखाबाद की जनता के सामने स्वामी जी ने मूर्तिपूजा का खण्डन करते हुए जोरदार व्याख्यान दिया तो पादरी लूकस तिलमिला गया। उसने स्वामी जी से कहा, 'यदि मूर्ति के सामने मस्तक न झुकाने के फलस्वरूप तुम्हें तोप से उड़ा दिया जाएगा तो तुम क्या कहोगे?' स्वामी जी ने उत्तर दिया- 'मैं कहूँगा कि उड़ा दो।'

महर्षि किसी भी अच्छे सुझाव को तत्काल मान लेते थे। कोलकाता से सम्बन्धित ऋषि के जीवन का ही प्रसंग है। जब केशवचन्द्र सेन ने उनसे कहा कि आप संस्कृत में बोलते हैं तो उसका अनुवाद करने वाला कुछ अलग ही अर्थ बता देता है। आप आर्य भाषा में बोलिये। इसी तरह जन समूह में मात्र कोपीन पहनकर रहना भी औचित्यपूर्ण नहीं है। वस्त्रों में भी सामाजिकता हो। स्वामी जी ने दोनों ही बातें स्वीकार कर लीं।

ऋषि जी के समय उनके भक्तों पर तो संकट नहीं आता था, पर जो उनसे शास्त्रार्थ में हार जाते थे, वे कहीं के नहीं रहते थे। काशी शास्त्रार्थ की तरह ही अन्य शास्त्रार्थ की भी अपनी-अपनी रोचक कहानियाँ हैं।

डॉ. धर्मवीर जी अपने रोचक संस्मरणों की तरह ही मन्द-मन्द मुस्कुराते हुए तथा अगले संस्मरण की पृष्ठभूमि बनाते हुए मंच छोड़ते हैं।

सायंकालीन स्वाध्याय: अध्ययन, अनुशीलन और अनुकरण:- आचार्य सोमदेव जी सायंकालीन स्वाध्याय के रूप में 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' का अध्ययन, मनन एवं चिन्तन पिछले कुछ समय से करा रहे हैं। प्रामाणिक एवं अप्रामाणिक ग्रन्थों की चर्चा के बाद कुछ प्रतीकात्मक आर्ष कथाओं के सही स्वरूप और अर्थ को प्रतिपादित करने का भगीरथ कार्य उक्त ग्रन्थ के माध्यम से आचार्य जी कर रहे हैं। प्रजापति ब्रह्मा और उनकी पुत्री सरस्वती की विवादास्पद कथा, गोतम-अहल्या की जारकर्म और शाप से जुड़ी अविश्वसनीय कथा, इन्द्रवृत्रासुर युद्ध की अलौकिक कथा, देवासुर संग्राम की शाश्वत कथा आदि मूलरूप से प्राकृतिक प्रतीकों और बिम्बों से सम्बन्ध रखती हैं। पौराणिकों ने उनको व्यक्तिगत, सामाजिक परिवेश में ढालकर विकृत कर दिया है।

इस पखवाड़े में इन्द्रवृत्रासुर युद्ध कथा, देवासुर संग्राम कथा, कश्यप कथा तथा गया श्राद्ध की प्रतीक कथा का 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' के माध्यम से सही अर्थ समझाने का सफल प्रयत्न आचार्य श्री सोमदेव जी ने किया। महर्षि कहते हैं: यहाँ सूर्य का इन्द्र नाम है। वह अपनी किरणों से वृत्र अर्थात् मेघ को मारता है। जब वह मरकर पृथ्वी पर गिर पड़ता है, तब अपने जलरूपी शरीर को सब ओर फैला देता है। फिर उससे अनेक बड़ी-बड़ी नदियाँ परिपूर्ण होकर समुद्र में जा मिलती हैं। देवासुर संग्राम का मूल तथ्य तो यह है कि पुण्यात्मा मनुष्य देव हैं और पापात्मा मनुष्य ही असुर हैं। इनका परस्पर विरोध ही युद्ध है, जो निरन्तर चलता रहता है। इसी तरह दिन और रात, प्रकाश और अन्धकार, शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष, उत्तरायण और दक्षिणायन, सद्विचार और दुर्विचार- देव-असुर ही हैं, जिनका संग्राम चलता रहा है, चल रहा है और चलता रहेगा।

जो परोपकारी और पर दु:ख भंजक हैं, उनकी हमेशा स्वार्थी तथा कपटी लोगों से लड़ाई चलती रही है। अन्त में देव ही जीतते हैं और असुर को हार खानी पड़ती है। अन्तर्मन के द्वन्द्व को भी इस कथा से जोड़ा जा सकता है। कश्यप कथा में प्रजा को उत्पन्न करने के कारण परमेश्वर को 'कूर्म' तथा अपने ज्ञान से सबको देखने के कारण 'कश्यप' कहा जाता है। कश्यप शब्द पश्यक शब्द के अक्षर विपर्यय से बना है। इसी तरह सन्तति अपने माता, पिता, गुरु एवं अन्य वयोवृद्धों की श्रद्धापूर्वक सेवा करके मोक्ष रूपी विष्णु पद को प्राप्त करे, यही गया श्राद्ध है।

आचार्य सोमदेव जी अपनी व्याख्या एवं विवेचना के बीच में व्यंग्य तथा विनोदपूर्ण कथाओं, प्रसंगों और संस्मरणों को सुनाकर विषय को अधिक मर्मस्पर्शी एवं रोचक बना देते हैं। यह उनकी कथ्य को लोकभोग्य बनाने वाली विशिष्ट लाक्षणिक शैली है, जो दर्द और दवा-दोनों प्रदान करती है।

विविध: अवसर, आयोजन और अभिव्यक्ति:- प्रात:कालीन एवं सायंकालीन महत्त्वपूर्ण स्वाध्याय सत्रों के साथ ही ऋषि उद्यान के ब्रह्मचारियों, वानप्रस्थियों एवं अतिथि धर्मप्रेमी सज्जनों की अभिव्यक्ति- प्रतिभा को अवसर प्रदान करने के लिए विविध आयोजन होते हैं। प्रवचन, गीत, भजन आदि के माध्यम से वे अपनी भावयित्री प्रतिभा को

thearyasamaj.org

वाणी प्रदान करते हैं। इस पखवाड़े में बहन सुकामा, ब्र. मनोज, ब्र. अक्षय, ब्र. उपेन्द्र, ब्र. काव्यप्रकाश, ब्र. अभय, ब्र. सत्यवीर आदि ने उपासना के विभिन्न अंगों के साथ ही नववर्ष के स्वागत और शहीदों के स्मरण से जुड़े वक्तव्य, गीत तथा विचार प्रस्तुत किये। सभी श्रोता आश्रमवासियों ने उनके सद्प्रयासों की सराहना की। भजनोपदेशक **श्री रामचन्द्र जी** ने भी पूरी तन्मयता एवं रागात्मकता के साथ स्तुति, प्रार्थना और उपासना से सम्बन्धित गीत प्रस्तुत किए। उन्होंने 'ओ३म् सर्वाधार है', 'इंसान भटकते देखा है', 'मैं तुम्हें पहचान न पाया' जैसे मार्मिक और मधुर गीतों को विभिन्न राग-रागिनियों के माध्यम से साधकों के मध्य प्रस्तुत किया। हम भी अपने ज्ञान, अनुभव और आनन्द को मुक्त हस्त होकर इसी तरह वितरित करते रहें, यही ऋषिकर्म है, यही कृषिकर्म है, यही 'तेनत्यक्तेन भुञ्जीथा:' है। ठीक ही कहा है-

खेत श्रद्धा है, पसीने का उसे अमृत पिलाओ,
बीज है विश्वास, उसको खेत में जाकर जिलाओ।
जिन्दगी की क्यारियों में फूल-फल-पत्ते सभी हैं,
स्वयं खाओ, किन्तु उसके पूर्व औरों को खिलाओ।।

डॉ. धर्मवीर जी का प्रचार कार्यक्रमः-

सम्पन्न कार्यक्रम- (क) ४ व ५ फरवरी २०१५- पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ की दयानन्द शोध पीठ में व्याख्यान।

(ख) ६ फरवरी २०१५- दिल्ली में कार्यकर्त्ता श्री लक्ष्मण जी जिज्ञासु के यहाँ संस्कार कार्यक्रम।

(ग) ८ फरवरी २०१५- रोहतक प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में व्याख्यान।

(घ) १३ से १७ फरवरी २०१५- आर्यसमाज नागपुर में वेदकथा।

(ङ) १९ व २० फरवरी २०१५- शोध-संगोष्ठी, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में व्याख्यान।

(च) २१ फरवरी २०१५- गुरुकुल झज्जर के वार्षिकोत्सव में सहभागिता।

(छ) २२ फरवरी २०१५- पुस्तक मेला, दिल्ली में वैदिक साहित्य का वितरण व प्रचार।

(ज) २३ फरवरी से १ मार्च २०१५- यज्ञ समिति सोनीपत द्वारा आयोजित पारायण यज्ञ में मुख्य उपस्थिति।

(झ) ४ से ६ मार्च २०१५- आर्यसमाज नई मण्डी, मुजफ्फरनगर में आर्यबन्धुओं को मार्गदर्शन।

(ञ) ०८ मार्च २०१५- गुड़गाँव में आर्य परिवार में संस्कार कार्यक्रम।

(ट) १३ से १५ मार्च २०१५- गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय द्वारा समायोजित वेदगोष्ठी में समुपस्थिति।

(ठ) १८ मार्च २०१५- कोलकाता में परोपकारिणी सभा के अधिवेशन में समभागिता।

(ड) २१ व २२ मार्च २०१५- आर्यसमाज लाडवा, कुरुक्षेत्र का भवन उद्घाटन कार्यक्रम।

(ढ) २७ से २९ मार्च २०१५- आर्यसमाज बस्ती, उ.प्र. के कार्यक्रम में मार्गदर्शन।

आगामी कार्यक्रम- (क) १६ से १९ अप्रैल २०१५- आर्यसमाज जनकपुरी, डी-ब्लॉक, दिल्ली के कार्यक्रम में व्याख्यान।

(ख) २३ से २६ अप्रैल २०१५- आर्यसमाज मयूर विहार, दिल्ली के कार्यक्रम में मार्गदर्शन।

(ग) १ से १२ मई २०१५- बेंगलूर (कर्ना.) के कार्यक्रम में विशेष उपस्थिति।

(घ) १३ मई २०१५- श्री सीताराम जी गोयल के यहाँ सूरत (गुज.) में संस्कार कार्यक्रम।

विद्वानों को अपनी शिक्षा से कुमार ब्रह्मचारी और कुमारी ब्रह्मचारिणियों को परमेश्वर से लेके पृथिवी पर्य्यन्त पदार्थों का बोध कराना चाहिये कि जिससे वे मूर्खपनरूपी बन्धन को छोड़ के सदा सुखी हों।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ६.८

इस संसार में माता-पिता, बन्धुवर्ग और मित्रवर्गों को चाहिये कि अपने सन्तान आदि को अच्छी शिक्षा देकर ब्रह्मचर्य करावें जिससे वे गुणवान् हों।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ६.९

thearyasamaj.org

जिज्ञासा समाधान - ८५

- आचार्य सोमदेव

जिज्ञासा १- क्या आधुनिक वैज्ञानिक लोग ऋषि नहीं हैं, जिन्होंने छोटे से बड़े अनेक प्रकार के वैज्ञानिक यन्त्र और मशीनें बना कर आम आदमी को आराम पहुँचाया? परहित में ये सब अविष्कार किए, क्या यह बड़ी लोक सेवा नहीं है? सिलाई मशीन, साइकिल, मोटर साइकिल, कार, हवाई जहाज, रेलगाड़ी, टेलीफोन और अन्तिम मोबाइल फोन आदि क्या लोक सेवा नहीं है? इन वैज्ञानिकों को ऋषि का दर्जा क्यों नहीं दिया जाना चाहिए? यह एक ऐसा तथ्य है, जो सबको स्वीकार्य है।

हम लोग मूर्ति, मन्दिर, पूजा, अवतार आदि के ढोंग में ही फँसे रहे। धर्म के नाम पर अनेक प्रकार के अपराध करते रहे। महर्षि दयानन्द ने लोगों को जगाया कि तुम कहाँ गहरे अन्धकार में डूबे हो? वे सामाजिक क्रान्ति के अग्रदूत बने, इसीलिए महर्षि कहलाए।

तो क्या आधुनिक वैज्ञानिक लोग, जिन्होंने आम आदमी की सुख-सुविधा के लिए आविष्कार कर लोक कल्याण का मार्ग अपनाया, ऋषि महर्षि नहीं हैं? यह एक जिज्ञासा विचार का विषय है।

इस पर खुले रूप में विचार करना चाहिए।

ये वैज्ञानिक ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करते थे या नहीं- यह अलग विषय है, किन्तु इन्होंने लोगों का बड़ा उपकार किया- एक ध्रुव सत्य है। ये वैज्ञानिक लोग प्रायः विदेशी ही रहे। हमारे देश के ऐसे नामचीन (मशहूर) कितने वैज्ञानिक हैं, यह चिन्तनीय विषय है।

इन तथ्यों को सामने रखकर इस महती जिज्ञासा का समाधान अपेक्षित है।

- डॉ. एस.एल. वसन्त, बी-१३८४, नागपाल स्ट्रीट, फजिल्का, पंजाब

समाधान - आपने आधुनिक वैज्ञानिकों को ऋषि कोटि में कहा जाये या नहीं- यह जानना चाहा है। इस विषय में शास्त्र ऋषि किसको कहते हैं? -यह देख लेते हैं। इसे देखने के पश्चात् अपने-आप निर्णय हो जायेगा कि आज के आधुनिक वैज्ञानिक ऋषि हैं या नहीं। महर्षि यास्क अपने निरुक्त शास्त्र में ऋषि की परिभाषा लिखते हैं- **साक्षात् कृतधर्माण ऋषयो बभूवुः।** अर्थात् वेदार्थ को स्वयं समझ लेने वाले ऋषिगण होते हैं, मन्त्रों के अर्थ द्रष्टा को ऋषि कहते हैं। महर्षि दयानन्द ने भी ऋषि की परिभाषा यही की है। **अग्निः पूर्वेभिर्ऋषिभिरीड्यो।** ऋ. १.१.१.२

इस मन्त्र की व्याख्या में महर्षि लिखते हैं- 'ऋषिभिः' 'मन्त्रार्थ देखने वाले विद्वान्' और चरक में भी आप्त=ऋषि का लक्षण लिखा है-

रजस्तमोभ्यां निर्मुक्तास्तपोज्ञानबलेन ये।
येषां त्रिकालममलं ज्ञानमव्याहतं सदा।।
आप्ताः शिष्टा विबुद्धास्ते तेषां वाक्यमसंशयम्।
सत्यं वक्ष्यन्ति ते कस्मादसत्यं नीरजस्तमाः।।

जो तपोबल एवं ज्ञानबल के द्वारा रजोगुण और तमोगुण से भली भाँति मुक्त हैं, जिनका सम्पूर्ण ज्ञान तीनों कालों में मलरहित अर्थात् दोषरहित हैं, ऐसे महापुरुष आप्त=प्रामाणिक, शिष्ट=सभ्य एवं विबुद्ध=विशेष ज्ञानवान् होते हैं। इनके वाक्य अर्थात् सत्योपदेश युक्त वचन विश्वास के योग्य होते हैं। वे लोग रजोगुण और तमोगुण से रहित होने के कारण ही सदा सत्य भाषण करते हैं, न कि असत्य भाषण।

यह परिभाषा शास्त्रों में ऋषि=आप्त की दी हुई है। अब यदि ये आधुनिक वैज्ञानिक इस परिभाषा के अनुसार हैं तो ऋषि कहला सकते हैं। यदि नहीं हैं तो वे ऋषि भी नहीं हो सकते।

हाँ, ऋषियों में मन्त्रार्थ देखने के साथ-साथ सभी प्राणियों के कल्याण की भावना होती है, प्रकृति को समझकर उसका सदुपयोग कर लेने का गुण होता है। इसके अनुसार जो वैज्ञानिक जितने अंश में प्राणी कल्याण की भावना से युक्त, प्रकृति का सदुपयोग करने वाला है, वह उतने अंश में ऋषि है, ऋषि कहला सकता है। ऋषि लोग पूर्ण ईश्वर विश्वासी, ईश्वर का साक्षात् दर्शन करने वाले, वेद को यथार्थ रूप से जानने वाले होते हैं, सदा अपने व अन्य आत्माओं का भला सोचने व करने वाले होते हैं। ऋषियों के इन गुणों के अनुसार जो वैज्ञानिक ईश्वर विश्वासी, ईश्वर दर्शन करने व वेद को जानने-मानने वाला तथा अपना व अन्यों का भला करने व सोचने वाला है, उसको आप ऋषि कह सकते हैं।

वर्तमान के वैज्ञानिक जो आस्तिक हैं, ईश्वर को मानने वाले हैं, उनको छोड़कर जो केवल खोज मात्र करने में लगे हैं, वह खोज धर्म पूर्वक है या अधर्म पूर्वक, इस पर विचार न करते हुए लगे हैं तथा ऐसी खोजें- जो मानव व

thearyasamaj.org

अन्य प्राणियों के लिए घातक हो सकती हैं, उनको ऋषि कैसे कह सकते हैं?

आज का युग अर्थ प्रधान बना दिया गया है। इस अर्थ प्रधान युग में कितने ही वैज्ञानिकों को कोई कम्पनी खरीद लेती है और उनसे अधिक-से-अधिक पैसा कमाया जाये, वे खोजें करवाई जाती हैं। आज सब्जियों में मिले जहर को देखिए! जो सब्जी ऊपर से ताजा व सुन्दर दिखती है, वह कितने जहर से युक्त होती है? यह जहरीली सब्जी किसने तैयार की या करवाई? आज के वैज्ञानिक ने। टमाटर के गुण सूत्र और मछली के गुण सूत्र को मिलाकर एक उन्नत किस्म का टमाटर किसने बनाया? आज के वैज्ञानिक ने। जो केवल अर्थ के लिए खोज करता है, केवल अपने प्रयोजन के लिए खोज करता है, वह ऋषि कदापि नहीं कहला सकता।

आपका कथन है कि जिन वैज्ञानिकों ने आम आदमी को दृष्टि में रखते हुए उनकी सुख-सुविधाओं के लिए खोज की, लोक कल्याण का मार्ग अपनाया, वे ऋषि महर्षि क्यों न हों? इसके लिए हमने ऊपर स्पष्ट कर दिया। जितने अंश में ऋषि गुणों से वे मेल खाते हैं, उतने अंश में ऋषि हो सकते हैं। उनको ऋषि कहने में दोष नहीं, किन्तु आज के वैज्ञानिक सर्वांश में ऋषि नहीं हैं, नहीं हो सकते।

आपने कहा- ये वैज्ञानिक ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं या नहीं- यह अलग विषय है.....। यथार्थता तो यह है कि जब हम ईश्वर अलग रख देंगे, तब हम जगत् का पूर्ण भला कर ही नहीं सकते। ईश्वर को माने बिना व्यक्ति पूर्ण धार्मिक नहीं हो सकता। जब तक व्यक्ति पूर्ण धार्मिक नहीं है, तब वह सबके लिए उपकारी नहीं हो सकता। ऐसी स्थिति में ऋषि संज्ञा से वह परे ही है।

ये वैज्ञानिक प्राय: विदेशी ही हैं, ऐसा नहीं है। आज भी हमारे देश में ऐसे प्रतिभा सम्पन्न वैज्ञानिक हैं, जिनको विदेशी लिए बैठे हैं, अथवा हमारे लोग विदेश जा बैठे हैं। आज हमारे देश के वैज्ञानिकों ने सुपर कम्प्यूटर की खोज और उससे भी आगे की खोज भी कर रखी है। मंगल यान को भेजने वाले हमारे ही देश के वैज्ञानिक हैं, जिन्होंने अमेरिका से बहुत कम खर्च में और बहुत कम दिन में मंगल पर मंगल यान को भेज दिया। हमारे ही देश में दुनिया का सबसे बड़ा भाषा वैज्ञानिक महर्षि पाणिनी हुआ, जिसके भाषा विज्ञान को समूचा संसार प्रणाम करता है। हमारे ही देश के प्रकृति के महान् वैज्ञानिक महर्षि कणाद हुए, जो प्रकृति के अन्तिम छोर तक गये, जिस छोर तक आज वैज्ञानिक जाने की कल्पना भी नहीं कर सकते। महर्षि भारद्वाज अद्‌भुत विमानों की खोज करने वाले इसी भारत भूमि के थे, जिन्होंने बृहद् विमान शास्त्र की रचना की, जिसके आधार पर हमारे ही देश के श्रीमान् शिवकर बापु तलपदे ने अमेरिका के राईट बन्धुओं से कई वर्ष पूर्व विमान की रचना कर मुम्बई में उड़ा कर दिखाया। जिस चालक रहित विमान की खोज आज के वैज्ञानिकों ने बहुत बाद में की, उस चालक विमान को इन्हीं तलपदे जी ने पहली बार में ही बना डाला था।

रसायन शास्त्र के महावैज्ञानिक नागार्जुन हमारे देश के थे। शल्य चिकित्सा के खोजी हमारे ही देश के थे, जिसका प्रमाण 'सुश्रुत' में मिलता है। आधुनिक गणितज्ञों में श्रीनिवास रामानुजम् का नाम समग्र विश्व में बड़े ही आदर से लिया जाता है, वह भी इसी देश के थे। आर्यभट्ट, भास्कराचार्य, वराहमिहिर, जगदीश चन्द्र बोस आदि न जाने कितने वैज्ञानिक इसी भारत भूमि के ही थे।

हाँ, आज वर्तमान में हमें अवश्य लगता है कि विदेश के वैज्ञानिक अधिक हैं, किन्तु यथार्थ में भारतीय वैज्ञानिक ही अधिक मात्रा में हैं। अस्तु।

जिज्ञासा २- आपकी 'जिज्ञासा समाधान-८२' में अभौतिक शरीर के जीव के २४ प्रकार के सामर्थ्य का विवरण तो लिखा है, लेकिन सूक्ष्म शरीर के १७ तत्त्व कौन-कौन से हैं, उसका विवरण प्राप्त नहीं है। कृपया, उनका विवरण यदि उपलब्ध है तो लिख कर बताने की कृपा करें।

- वेद प्रकाश गुप्ता, एफ १-३-३, सेक्टर ३-४, 'ज्ञानदीप', वाशी, नवी मुम्बई-४००७०३

समाधान- तीन शरीर हैं- स्थूल, सूक्ष्म और कारण। इनमें से सूक्ष्म शरीर का स्वरूप महर्षि लिखते हैं- 'पाँच प्राण, पाँच ज्ञानेन्द्रिय, पाँच सूक्ष्म भूत, मन तथा बुद्धि- इन सत्तरह तत्त्वों का समुदाय सूक्ष्म शरीर कहाता है। यह सूक्ष्म शरीर जन्ममरणादि में भी जीव के साथ रहता है।' यह सूक्ष्म शरीर स्थूल शरीर के आश्रय से ही कार्य करता है, बिना स्थूल शरीर के यह कार्य नहीं कर सकता। जैसे स्थूल शरीर आत्मा का कर्म करने का साधन है, वैसे ही यह सूक्ष्म शरीर भी साधन ही है। अन्तर इतना ही है कि आत्मा केवल सूक्ष्म शरीर से अपने प्रयोजन को सिद्ध नहीं कर सकता, आत्मा के प्रयोजन तभी सिद्ध होते हैं, जब इसको (सूक्ष्म शरीर के साथ) स्थूल शरीर प्राप्त हो जाता है।

जिज्ञासा ३- महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ९वें सम्मुलास

thearyasamaj.org

में मुक्ति के आनन्द को भोगने वाले जीव को गुण स्वरूप सूक्ष्म शरीर या संकल्प शरीर भी कहते हैं। यह किस प्रकार प्राप्त होता है और कब व किससे या किस समय चालू होता है?

- स्वामी जिलानन्द वैदिक आश्रम, ग्रा. बिजोपुरा, पो. छपार, जनपद मुजफ्फरनगर, उ.प्र.

समाधान- हमने पहले भी जिज्ञासा समाधान में लिखा था कि आत्मा मुक्ति का सुख अपने स्वाभाविक सामर्थ्य से भोगता है, न कि किसी प्राकृतिक साधनों से। आपने महर्षि दयानन्द का नाम लेते हुए लिख दिया कि 'मुक्ति के आनन्द.....।' जिस संकल्प या अभौतिक अथवा स्वाभाविक शरीर से आत्मा मुक्ति के आनन्द का भोग करता है, वह कहीं किसी प्रकार से प्राप्त नहीं होता, उसका कहीं से प्रारम्भ नहीं है, वह आत्मा का अपना स्वरूप है, जो कि आत्मा के साथ सदा रहता है। यह आत्मा अथवा आत्मा का अपना स्वरूप अनादि है। इसका न तो कहीं प्रारम्भ है और न ही अन्त। इसी अपने स्वाभाविक स्वरूप से आत्मा मोक्ष सुख परमेश्वर की कृपा से भोगता है। अलमिति।

नोट- जिज्ञासुओं से निवेदन है कि कृपया, प्रश्न स्पष्ट एवं सुपाठ्य हस्त लेख में लिखें, जिससे वह सरलता से समझ में आ सके।

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

प्रतिक्रिया

१. परोपकारी नियमित रूप से प्राप्त हो रही है। डॉ. धर्मवीर जी के सम्पादकीय सराहनीय हैं तथा आर्यसमाज की विचारधारा का दिग्दर्शन कराते हैं। स्वामी विष्वङ् जी दर्शन व उपनिषदों के आधार पर ज्ञानवर्धक लेख लिखते हैं, यह उनके दीर्घ अनुभव के आधार पर लिखे गये हैं। श्री राजेन्द्र जिज्ञासु आर्यसमाज की ऐतिहासिक बातें बताकर तड़प-झड़प शीर्षक के अन्तर्गत अच्छा ज्ञानवर्धन करते हैं।

गत दिनों ऋषि उद्यान में योग साधना शिविर में मैंने भाग लिया। मुझे वहाँ अच्छा अनुभव एवं पथ प्रदर्शन प्राप्त हुआ। आचार्यगण एवं ब्रह्मचारी अनुशासित एवं नियमित रूप से कार्य कर रहे हैं।

- आचार्य सोनेराव, ६९ए, आर्गाइल रोड, लन्दन (यू.के.) डब्ल्यू १३ ओ.एल.वाई.

२. परोपकारी दिसम्बर द्वितीय-२०१४ के अंक में डॉ. निरूपण विद्यालंकार का लेख 'महर्षि दयानन्द और सृष्टिसम्वत्' प्रकाशित हुआ है। इस लेख के अन्तिम भाग में लेखक ने अपने लेख के मूल विषय से हटकर जीव और ब्रह्म के स्वरूप के बारे में चर्चा की है। उन्होंने 'अध्यात्म रामायण' नामक अनार्ष ग्रन्थ का उद्धरण देकर लिखा है कि- 'जीव ब्रह्म सूक्ष्म होने से स्थूल नेत्रों से दृष्टिगोचर नहीं होते, प्रत्युत योगाभ्यास द्वारा वे दिखाई देते हैं, अत: जीव, ब्रह्मादि निराकार वस्तुओं को सर्वथा अरूप कहना नितान्त असंगत है। योगियों को योग बल द्वारा जीवात्मा तथा परमात्मा का जो समाधिजन्य प्रत्यक्ष होता है, वह सूक्ष्मतम रूप वाला होना चाहिए।'

डॉ. निरूपण जी का उक्त मत अनुचित है, क्योंकि वेदादि शास्त्रों में सर्वत्र इन दोनों चेतन, निराकार तत्त्वों को अरूप, अदृश्य ही प्रतिपादित किया है। रूप (या दृश्यमान होना) केवल प्रकृति का गुण है, जीव और ब्रह्म का नहीं। सूक्ष्म मूल-प्रकृति सृष्टि का उपादान कारण है। उसमें से निर्मित सभी कार्य पदार्थों में रूप गुण विद्यमान रहता है- चाहे सूक्ष्म रूप हो या स्थूल रूप हो, मगर जीव और ब्रह्म मूल-प्रकृति के कार्य पदार्थ नहीं हैं। ये दोनों अनादि, अनुत्पन्न, चेतन पदार्थ हैं। ये दोनों सर्वथा अप्राकृतिक, अभौतिक सत्ताएँ हैं। उन दोनों में रूप-गुण का सर्वथा अभाव ही होता है, अत: कोई भी व्यक्ति, चाहे वह सामान्य हो या विशेष योग्यता प्राप्त महान योगी- इन दोनों पदार्थों को कभी भी रूपवान् के रूप में नहीं देख सकता।

समाधि तभी प्राप्त हो सकती है, जब व्यक्ति को इन तीनों अनादि सत्ताओं का स्वरूप विषयक वास्तविक ज्ञान हो। समाधि अवस्था में साधक को जब आत्मा और परमात्मा का साक्षात्कार होता है, तब भी ये दोनों पदार्थ- जीव और ब्रह्म सर्वथा अरूप ही होते हैं और समाधि अवस्था में भी योगी को अरूपवान् के रूप में साक्षात्कार-दर्शन होता है। समाधि ज्ञान की सर्वोत्तम अवस्था होती है, उसमें मिथ्या ज्ञान या भ्रान्ति के लिए कोई भी अवकाश नहीं होता।

समाधि अवस्था में आत्म-दर्शन या ईश्वर-साक्षात्कार का अर्थ किसी रूप में देखना नहीं है। साधक इन पदार्थों के जिन यथार्थ गुण-कर्म-स्वभावों को निश्चयात्मक मानकर अभी तक अनुमान तथा शब्द प्रमाण के आधार पर जानता था उसको समाधि अवस्था में सीधा प्रत्यक्ष करता है और ईश्वर का सान्निध्य पाकर उसे अलौकिक आनन्द आदि गुणों की प्राप्ति होती है।

- भावेश मेरजा, ८-१७, टाउनशिप, पो. नर्मदानगर, भरुच, गुजरात-३९२०१५

thearyasamaj.org

आर्यजगत् के समाचार

१. होली का आदर्श रूप- आर्य समाज काँसा, तह. डभरा, जि. जाँजगीर चाम्पा, छत्तीसगढ़ द्वारा होलिका पर्व में कुछ ऐसा रंग बिखेरा, जिसने लोगों के दिलों को रंग दिया। प्रात:काल ९.३० बजे शान्त व भक्ति भरे वातावरण में नवसस्येष्टि यज्ञ का आयोजन किया गया, जिसमें गाँव के श्रद्धालु लोगों ने अपने खेतों में उपजे नये-नये अन्नों से पृथिवी, जल, अग्नि, वायु आदि देवों व परमदेव परमात्मा को अपनी आहुति प्रदान कर सन्तृप्त किया। यज्ञोपरान्त आचार्य सुरेश जी बहुत सुंदर भजन एवं आचार्य रणवीर जी का होली विषय पर प्रेरणीय प्रवचन हुआ। इस प्रकार यह कार्यक्रम १२ बजे तक चला।

सायं ३ बजे से फिर ४-५ गाँवों के सैकड़ों लोगों एवं क्षेत्रीय जनप्रतिनिधियों की उपस्थिति में बच्चों, युवाओं, बुजुर्गों व महिलाओं के जलेबी दौड़, कुर्सी दौड़, हांड़ी फोड़ आदि बहुत ही मनोरञ्जक खेलों का आयोजन हुआ। अन्त में पाली (कोरबा) से आए श्री लक्ष्मीनारायण पटेल जी ने अद्भुत प्रदर्शन से, जिसमें नौ व्यक्ति बैठे, बस को खींचकर दिखाया। सब देखने वाले दंग रह गये। तालियों की गड़गडाहट से सब दिशाओं को गुंजायमान कर दिया। पटेल जी ने बताया कि यह प्राणायाम की शक्ति से सम्भव हुआ है। हमें भी प्राणायामों को अपनाना चाहिए। सब विजेता व उपविजेताओं को पुरस्कार वितरण कर कार्यक्रम को सम्पन्न किया गया।

२. प्रवेश प्रारम्भ- गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय शुक्रताल, मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश में प्रवेश प्रारम्भ है। यह गुरुकुल महाविद्यालय गंगा के पावन तट पर ऋषि महर्षियों की तपस्थली, प्रकृति के सुरम्य वातावरण में स्थित है। यहाँ संस्कृत भाषा के साथ-साथ आधुनिक विषयों जैसे अंग्रेजी, गणित, इतिहास, भूगोल एवं अर्थशास्त्र आदि का अध्यापन सुयोग्य अध्यापकों के द्वारा कराया जाता है। कम्प्यूटर शिक्षा का भी ज्ञान कराया जाता है। **सम्पर्क-** ०९४११९२९५२८

३. प्रवेश सूचना- उत्तरप्रदेश के पूर्वाञ्चल में स्थित वेद वेदांग विद्यापीठ गुरुकुल आश्रम, महर्षि दयानन्द नगर, धनपतिगंज, जि. सुल्तानपुर में नवीन सत्र २०१५-१६ के लिए अप्रैल के प्रथम सप्ताह से प्रवेश प्रारम्भ हो रहा है। गुरुकुल में न्यूनतम आठ वर्ष के स्वस्थ बालक का प्रवेश, प्रवेश परीक्षा के उपरान्त सम्भव हो सकेगा। प्रारम्भ से उ.प्र. माध्यमिक संस्कृत शिक्षा परिषद् तथा शास्त्री आचार्य की सम्बद्धता महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से है। इच्छुक अभिभावक तुरन्त सम्पर्क करें। **सम्पर्क -** ०९६९५७२०६९१

४. बोधोत्सव, जन्मोत्सव, भवन का उद्घाटन- आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्मोत्सव, बोधोत्सव तथा महाशिवरात्रि पर्व आर्यसमाज गोरखपुर, जबलपुर द्वारा दिनांक १४ से १७ फरवरी २०१५ तक उल्लासपूर्वक मनाया गया। इसके अन्तर्गत इस अवसर पर नवीनीकृत ''वैदिक सत्संग भवन'' का उद्घाटन किया गया। इस कार्यक्रम में विशेष आमन्त्रित आर्यजगत् की प्रसिद्ध विदुषी सुश्री अंजली आर्या-करनाल द्वारा भजन एवं प्रवचन हुए।

५. प्रवेश प्रारम्भ- गुरुकुल झज्जर, युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती व स्वामी ओमानन्द सरस्वती के सपनों को साकार करने हेतु गत निन्यानवें वर्षों से मानव-निर्माण, आर्यों का तीर्थ एवं प्रेरणा स्थल तथा वैदिक शिक्षा के आदर्श केन्द्र के रूप में अहर्निश संलग्न है। अपने बालकों को गुरुकुल झज्जर, हरियाणा में प्रवेश दिलाने हेतु शीघ्रातिशीघ्र सम्पर्क करें।

विद्यार्थी पाँचवीं कक्षा उत्तीर्ण होना चाहिए तथा प्रवेश हेतु लिखित एवं मौखिक परीक्षा अप्रैल, मई व जून माह के प्रथम व तीसरे रविवार को होगी।

सम्पर्क सूत्र :- ०९४१६०५५०४४, ०९४१६१२६९७७
sudharak.gurukul@gmail.com

६. प्रवेश प्रारम्भ- आर्यसमाज हजारीबाग द्वारा संचालित आर्ष कन्या गुरुकुल, आर्यसमाज नवाबगंज, हजारीबाग (झारखण्ड) में ०१ से ३० मई २०१५ तक प्रवेश लिया जा रहा है। प्रवेशार्थ कन्याओं की आवश्यक अवस्था ९ से १२ वर्ष। कक्षा स्तर चौथी, पाँचवी, छठी। आर्षपाठ विधि के आधार पर विदुषी बनाने की तीव्र इच्छा रखने वाले माता-पिता ही अपनी कन्याओं को प्रवेश दिलायें। **सहयोग-** असमर्थ कन्याओं के लिए नि:शुल्क प्रबन्ध एवं समर्थ कन्याओं के लिए केवल ५०० रु. मासिक सहयोग राशि। आर्ष पाठ के साथ-साथ आधुनिक विषयों, भाषाओं एवं परीक्षाओं का सुप्रबन्ध। कन्याओं की योग्यता परीक्षण के उपरान्त प्रवेश दिया जायेगा। किन्हीं विशेष परिस्थितियों में नियमों में परिवर्तन संभव।

सम्पर्क- आचार्य कौटिल्य-०६५४६-२६३७०६, ०९४३०३०९५२५

thearyasamaj.org

७. वार्षिकोत्सव मनाया- आर्यसमाज खेड़ाअफगान, जनपद सहारनपुर में आर्यसमाज खेड़ाअफगान द्वारा अपने एक सौ सतरहवें वर्ष में वार्षिकोत्सव एवं धर्म जागृति महोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ ओ३म् की पताका फहराने और यज्ञ से हुआ। दिल्ली से पधारे पूर्व आईएएस अधिकारी आनन्दप्रकाश मित्तल परिवार सहित यजमान बने। इस अवसर पर बिजनौर से आचार्य विष्णु मित्र उपस्थित रहे।

८. वेद प्रचार कार्यक्रम- ओड़िशा का कोरापुट जिला गो हत्या एवं गो मांस खाने के नाम से तथा गरीबी के कारण प्रसिद्ध है। विभिन्न मत-सम्प्रदाय वाले थोड़े से प्रलोभन देकर अपने-अपने मत-सम्प्रदाय के विस्तार में लगे हुये हैं, अतः यहाँ के लोग गो माता की महत्ता को समझें, मानवीय कर्त्तव्यों तथा आर्य समाज के सिद्धान्तों से परिचित होवें, इसी पावन भावना से गुरुकुल हरिपुर, ग्रा. जुनवानी, जि. नुआपड़ा, ओड़िशा के तत्त्वाधान में २७-२८ फरवरी २०१५ को नवरंगपुर, जिला के नुआगुड़ा एवं कोरापुट जिला के बाइलगुड़ा व अण्डारगुड़ा को केन्द्र बनाकर शिविर एवं प्रचार कार्यक्रम सम्पन्न हुआ, जिसमें विभिन्न गाँवों के दो हजार महानुभावों को यज्ञ में आहुति प्रदान कर मांस, मदिरा आदि अभक्ष्य पदार्थों का सेवन नहीं करने का व्रत दिलाया गया।

९. पुरस्कृत- श्री चैतन्य मुनि तथा डॉ. प्रतिभा पुरन्धि को आर्यसमाज महर्षि दयानन्द मार्ग, शहीदनगर, भुवनेश्वर आर्यसमाज के वार्षिक उत्सव में क्रमशः "दयानन्द पुरस्कार-२०१५" और "शन्नोदेवी राष्ट्रीय वेदविदुषी पुरस्कार-२०१५" द्वारा सम्मानित किया गया।

१०. नवसस्येष्टि महोत्सव- आर्यसमाज नई मण्डी, मुजफ्फरनगर का ८७वाँ त्रिदिवसीय वार्षिकोत्सव ६ मार्च २०१५ को धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। श्री राकेश कुमार आर्य के पौरोहित्य में यज्ञ सम्पन्न हुआ। यज्ञ के यजमान डॉ. सत्यवीर सिंह आर्य-श्रीमती उर्मिला सिंह, श्री शरद कुमार-श्रीमती गरिमा, श्री पंकज कुमार-श्रीमती दीपा रहे। ब्रह्मापद पर प्रो. डॉ. धर्मवीर जी- कार्यकारी प्रधान परोपकारिणी सभा, अजमेर सुशोभित रहे।

११. प्रवेश प्रारम्भ- श्रीमद्दयानन्द आर्ष गुरुकुल खेड़ा-खुर्द, दिल्ली में कक्षा ६, ७, व ८ में प्रवेश प्रारम्भ हो गया है। इसके अतिरिक्त महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय से उत्तीर्ण छात्र का ९, १०, ११ व १२वीं में भी प्रवेश प्रारम्भ हो गया है। निर्धन छात्रों का सम्पूर्ण खर्च गुरुकुल वहन करता है। इच्छुक अभिभावक सम्पर्क करें। **सम्पर्क- आचार्य सुधांशु**-०८८००४४३८२६

१२. आवश्यकता- १. अध्यापक (अष्टाध्यायी पद्धति से संस्कृत अध्यापन) मानदेय - १५,०००/- मासिक

२. सेवक (चौकीदार) - मानदेय - ८,०००/- मासिक

३. वाहन चालक (ड्राइवर) - मानदेय - ८,०००/- मासिक

४. रसोइया - मानदेय - ८,०००/- मासिक

५. भजनिक, प्रचारक व पुरोहित - मानदेय - १५,०००/- मासिक

सभी पदों के लिए महिला सदस्य व वैदिक विचारधारा रखने वाले व्यक्ति को प्राथमिकता दी जाएगी। **सम्पर्क- अनामिका शर्मा**-०१४१-२५२५८७०, ०९८२९६६५२३१

१३. नव सम्वत्सर मनाया- आर्यसमाज, वैदिकधर्म प्रचार समिति, विश्व हिन्दू परिषद् आदि अनेक संगठनों के संयुक्त तत्त्वावधान में नव संवत्सर पर्व हर्षोल्लास से मनाया गया। आर्यसमाज सोजत के सभी संगठनों के पदाधिकारियों से सम्पर्क कर राजपोल द्वार के बाहर विशाल पण्डाल में यज्ञ किया गया। इसके पूर्व गुरुकुल विज्ञान आश्रम पाली के ब्रह्मचारियों द्वारा प्रातः जैतारणियाँ दरवाजा से राजपोल तक प्रभातफेरी निकाली गई।

१४. प्रवेश प्रारम्भ- योगिराज भगवान श्री कृष्ण की जन्मस्थली एवं युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती की दीक्षास्थली पवित्र ब्रज भूमि मथुरा में प्रखर राष्ट्रभक्त महाराजा श्री महेन्द्र प्रताप द्वारा प्रदत्त सुविस्तृत भूखण्ड में स्थित श्रद्धेय नारायण स्वामी जी की तपस्थली गुरुकुल विश्वविद्यालय, वृन्दावन में प्रवेश प्रारम्भ हो चुका है। प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण होने के उपरान्त ही विद्यार्थी को कक्षा ६ व ७ में योग्यता अनुसार प्रवेश दिया जा सकता है अथवा जिस विद्यार्थी को अन्य विषयों के साथ-साथ अष्टाध्यायी न्यूनतम ४ अध्याय कण्ठस्थ होगी, वह विद्यार्थी प्रवेश परीक्षा के उत्तीर्ण होने पर कक्षा ८ में भी प्रवेश पा सकता है। **सम्पर्क आचार्य हरिप्रकाश**- ०९४५७३३३४२५, ०९८३७६४३४५८

१५. पुरस्कृत- आर्य कन्या गुरुकुल शिवगंज, सिरोही, राजस्थान की दो ब्रह्मचारिणियों ने गुजरात में टंकारा स्थित ऋषि बोधोत्सव पर आयोजित डॉ. मुमुक्षु आर्य गुरु विरजानन्द सरस्वती पुरस्कार प्रतियोगिता में दिनांक १५ फरवरी २०१५ को सम्पूर्ण योगदर्शन एवं यजुर्वेद के ४०वें अध्याय के अर्थ सहित कण्ठस्थीकरण प्रतियोगिता में भाग लिया, जिसमें अन्य स्थानों से भी बहुत से प्रतिभागी पधारे। इस प्रतियोगिता

thearyasamaj.org

में ३ प्रतिभागियों ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, जिसमें गुरुकुल की कक्षा-८ की ब्रह्मचारिणी प्रज्ञा व कक्षा-११ की ब्रह्मचारिणी कृष्णा ने प्रथम स्थान प्राप्त कर डॉ. मुमुक्षु आर्य गुरु विरजानन्द सरस्वती पुरस्कार एवं ५-५ हजार रुपये प्राप्त कर आर्य कन्या गुरुकुल शिवगंज का गौरव बढ़ाया।

१६. **पुरस्कार**- आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान् एवं महोपदेशक तथा संस्कृत भाषा के प्रख्यात कवि एवं कथा लेखक डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री को विगत २० मार्च २०१५ को संस्कृत अकादमी उत्तर प्रदेश की ओर से विशिष्ट पुरस्कार प्रदान किया गया। पुरस्कार में शाल एवं सम्मान पत्र के साथ ही ५१०००/- की धन राशि भी प्रदान की गई।

१७. **स्थापना दिवस मनाया**- आर्यसमाज मन्दिर शाहपुरा, जि. भीलवाड़ा, राज. में प्रातः बृहद् यज्ञ किया गया, जिसमें स्थापना दिवस एवं नव सम्वत्सर के विशेष मन्त्रों की आहुतियाँ लगाई गयीं। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री सोहनलाल शारदा, मुख्य अतिथि डॉ. जितेन्द्र कुमार शास्त्री तथा विशिष्ट अतिथि श्री कल्याणमल मून्दड़ा थे।

वैवाहिक

१८. **वर चाहिये**- आर्यसमाज परिवार की सुन्दर, संस्कारित पुत्री, आयु २४ वर्ष, वर्ण-गौर, कद- ५ फुट ६ इंच, शिक्षा-एम.ए., बी.एड. अध्ययनरत कन्या अजमेर के लिए आर्यसमाजी परिवार का वर चाहिए।

सम्पर्क-०९४६०९३२७९५, ०९४६०२४२५३८

१९. **वर चाहिये**- आर्यसमाज परिवार की सुन्दर, संस्कारित पुत्री, आयु ३४ वर्ष, शिक्षा-एम.ए., पी-एच.डी, दिल्ली सरकार पी.जी.टी. में कार्यरत कन्या के लिए आर्यसमाजी परिवार का वर चाहिए।

सम्पर्क-०११-६५८७९६५०

२०. **वर चाहिये**- आर्यसमाज परिवार की सुन्दर, संस्कारित पुत्री, कद- ५ फुट ६ इंच, शिक्षा-एम.फिल अध्ययनरत, कन्या के लिए आर्यसमाजी परिवार का वर चाहिए। **सम्पर्क-०९८९६५२१८९४**

२१. **वधुएँ चाहिये**- मलेशिया में रहने वाले भारतीय संस्कृति एवं विचारधारा वाले दो सहोदर भाइयों हेतु वधुओं की आवश्यकता है। एक भाई का अपना व्यापार है, जिसकी आयु ३४ वर्ष है तथा दूसरा भाई इंजिनियर है, जिसकी आयु ३२ वर्ष है। **सम्पर्क-००६-०१६-९६३३७४४**

२२. **वधू चाहिये**- आर्यसमाज परिवार के सुन्दर, संस्कारित पुत्र, जन्म फरवरी १९९१, कद- ५ फुट ६ इंच, वर्ण-गेहुँआ, शिक्षा-बी.ए., व्यवसाय- राजस्थान पुलिस में सेवारत के लिए आर्यसमाजी परिवार की वधू चाहिए।
सम्पर्क-०९४६१५३०२९७

चुनाव समाचार

२३. **आर्य समाज औरंगाबाद, मीतरौल, पलवल** के चुनाव में **प्रधान**- श्री श्यामसिंह आर्य, **मन्त्री**- श्री वीरेन्द्रसिंह आर्य, **कोषाध्यक्ष**- श्री ठाकुरलाल आर्य को चुना गया।

२४. **आर्य समाज धन्ना तलाई, टोंक, राज.** के चुनाव में **प्रधान**- श्री सुखलाल आर्य, **मन्त्री**- श्री अमृतलाल गिरदावर आर्य, **कोषाध्यक्ष**- श्री केदार नारायण विजयवर्गीय को चुना गया।

२५. **आर्य उप-प्रतिनिधि सभा जनपद-आगरा** के चुनाव में **प्रधान**- श्री अर्जुनदेव महाजन, **मन्त्री**- श्री आर्य सत्यदेव गुप्ता एवं **कोषाध्यक्ष**- श्री विजय अग्रवाल को चुना गया।

२६. **आर्य समाज खलासी लाइन, सहारनपुर** के चुनाव में **प्रधान**- श्री बारूराम शर्मा, **मन्त्री**- श्री डॉ. राजवीरसिंह वर्मा, **कोषाध्यक्ष**- श्री रामकिशोर सैनी को चुना गया।

शोक समाचार

२७. आर्य जगत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक **पं. शोभाराम प्रेमी** का दिनांक ६/३/२०१५ को निधन हो गया। वे १०१ वर्ष के थे। उनकी श्रद्धाञ्जलि सभा दिनांक ११-३-२०१५ को आर्य समाज सूरज कुंड, मेरठ में सम्पन्न हुई।

२८. **श्री वेदमुनि** (पूर्वनाम वंशिधर मेहेर), बलांगिर, ओड़िशा निवासी का दि. २० मार्च २०१५ को ६० वर्ष की आयु में हृदयाघात के कारण निधन हो गया। आप आर्यसमाज के प्रचार आदि कार्य करवाने में बहुत रुचि लेते थे। अपने खर्च पर परोपकारिणी सभा के सहयोग से आपने प्रचार कार्य भी किया। सभा के सहयोगी भी थे। वे अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ गये।

२९. आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय होशंगाबाद (म.प्र.) के स्नातक ग्रा. देवगढ़, जि. देवास (म.प्र.) निवासी आर्य शिरोमणी श्री गोवर्धन लाल के छोटे सुपुत्र **श्री मनोज आर्य** का दि. २ मार्च २०१५ को दोपहर ११ बजे हृदयाघात के कारण निधन हो गया है। आप एक समर्पित, मृदुभाषी, व्यावहारिक, दानी व परोपकारी व्यक्तित्व के धनी थे। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ गये।

परोपकारी परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धाञ्जलि।

thearyasamaj.org

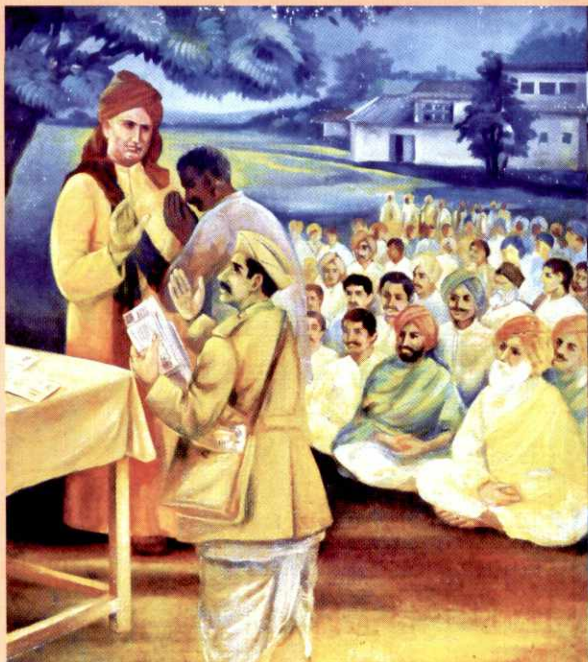

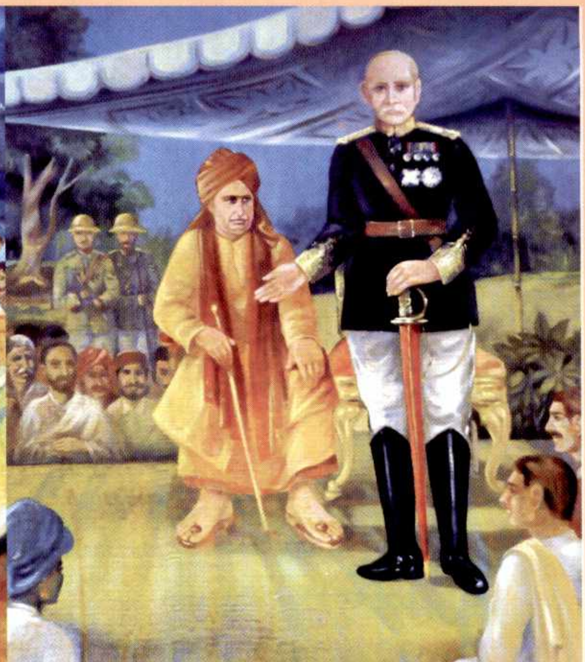

महर्षि के जीवन की झलकियाँ

thearyasamaj.org

आर जे/ए जे/80/2015-2017 तक प्रेषण : १५ अप्रैल, २०१५ ३९५९/५९

राजाधिराज नाहरसिंह वर्मा शाहपुराधीश

राजन्य वर्ग में श्री महाराज के प्रमुख शिष्य राजाधिराज नाहरसिंह जी का जन्म कार्तिक कृष्ण १३, सं. १९१२ वि. को ठिकाना धनोप के ठाकुर धीरतसिंह के यहाँ हुआ। स्वामी जी से इनकी प्रथम भेंट चित्तौड़ में हुई थी और वे प्रथम दर्शन में ही महाराज के तेजस्वी व्यक्तित्व से अत्यधिक प्रभावित हुये। पुनः श्री महाराज के सान्निध्य में रहकर नाहरसिंह जी ने लगभग तीन मास तक धर्म तथा राजनीति का पाठ पढ़ा। शाहपुराधीश को स्वामी जी का अगाध विश्वास प्राप्त था। वे कालान्तर में परोपकारिणी सभा के मन्त्री तथा प्रधान भी रहे। ७८ वर्ष की आयु में राजाधिराज का निधन आषाढ़ कृष्ण ६ सं. १९८९ को हुआ। अंग्रेजी सरकार ने इन्हें सर तथा के.सी.एस. आई. की उपाधियाँ प्रदान की थीं। वैदिक धर्म के दृढ़ अनुयायी नाहरसिंह जी ने प्रजाहित तथा लोक कल्याण की अनेक योजनाएँ अपने शासनकाल में प्रवर्तित कीं। राजाधिराज ने स्वामी जी की स्मृति में दयानन्द आश्रम की स्थापना हेतु अजमेर में आनासागर स्थित अपना विशाल बाग सभा को प्रदान किया, जहाँ कालान्तर में महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, यज्ञशाला एवं गौशाला आदि की प्रवृत्तियाँ संचालित की गईं। जब महाराणा सज्जनसिंह जी के असामयिक निधन के कारण परोपकारिणी सभा के प्रधान का पद एक वर्ष के भीतर ही रिक्त हो गया तो १८९३ (दिसम्बर) में सभा के छठे अधिवेशन में राजाधिराज शाहपुरा सभा के प्रधान पद पर प्रतिष्ठित किये गये। जोधपुर के कर्नल महाराज प्रतापसिंह ने जब सभा की अध्यक्षता स्वीकार ली तब राजाधिराज नाहरसिंह मन्त्री पद पर अभिषिक्त हुये। इस पद पर वे जीवन पर्यन्त रहे।

प्रेषक:
परोपकारिणी सभा
दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर
(राजस्थान) - ३०५००१

Design@Mittal 9829797513

AJMER